मानव मन्दिर

5/93

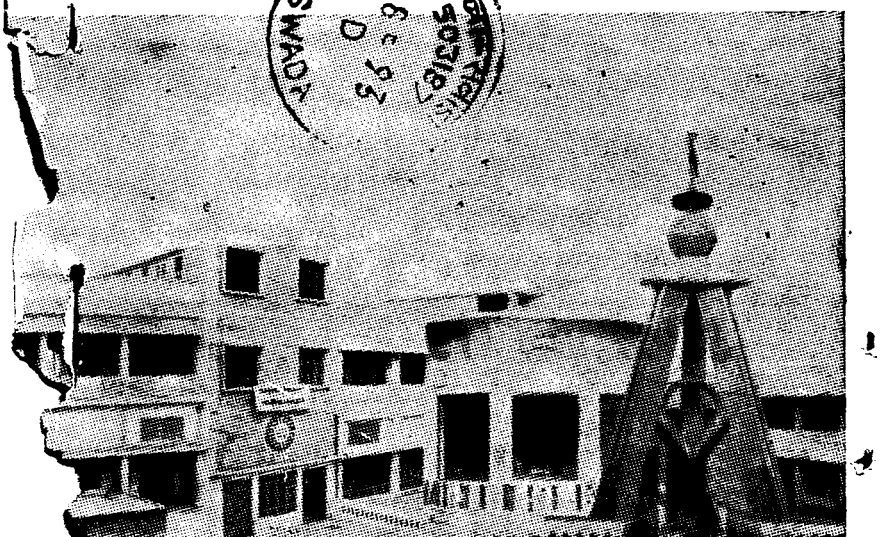

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	**Hoshiarpur**
Date of Publication	**10th of every month**
Periodicity of publication	**Monthly**
Printer's Name	Ravi Nanda
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Editor's Name	Ravi Nanda
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.**
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the TOTAL	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, Ravi Nanda **hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.**

Dated : 10 **Signature of Publisher**

Printed and Published by : Ravi Nanda **at**
Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur.
for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur

मानवता मन्दिर होशियारपुर में अगला मासिक सत्संग को होगा।

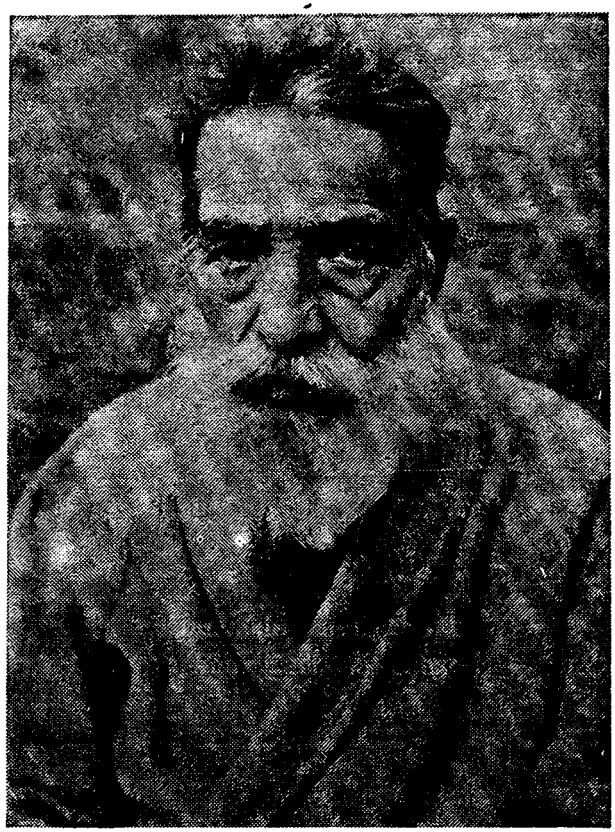

Param Sant Param Dayal
Pt. Faqir Chand Ji Maharaj

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

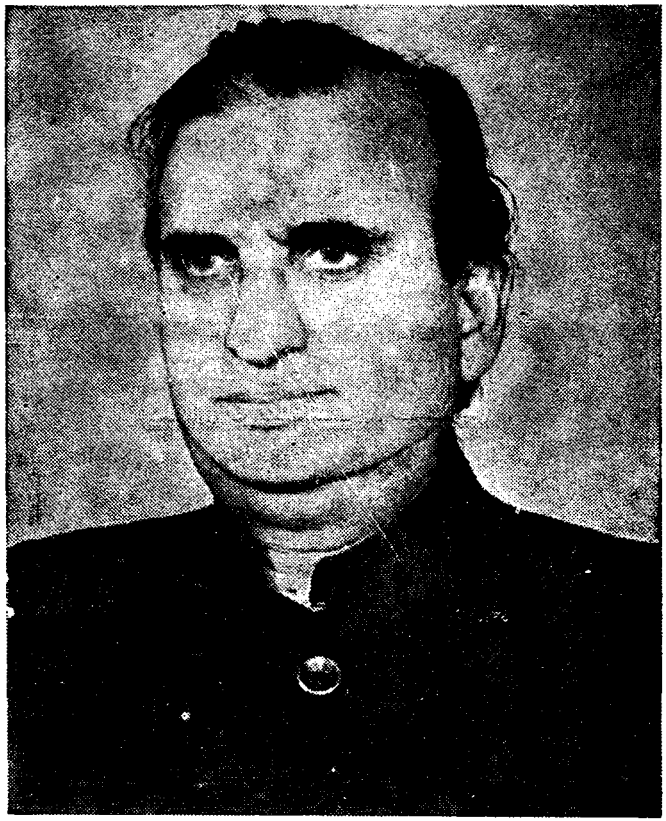

Param Sant Manav Dayal
Dr. I. C. Sharma Ji Maharaj

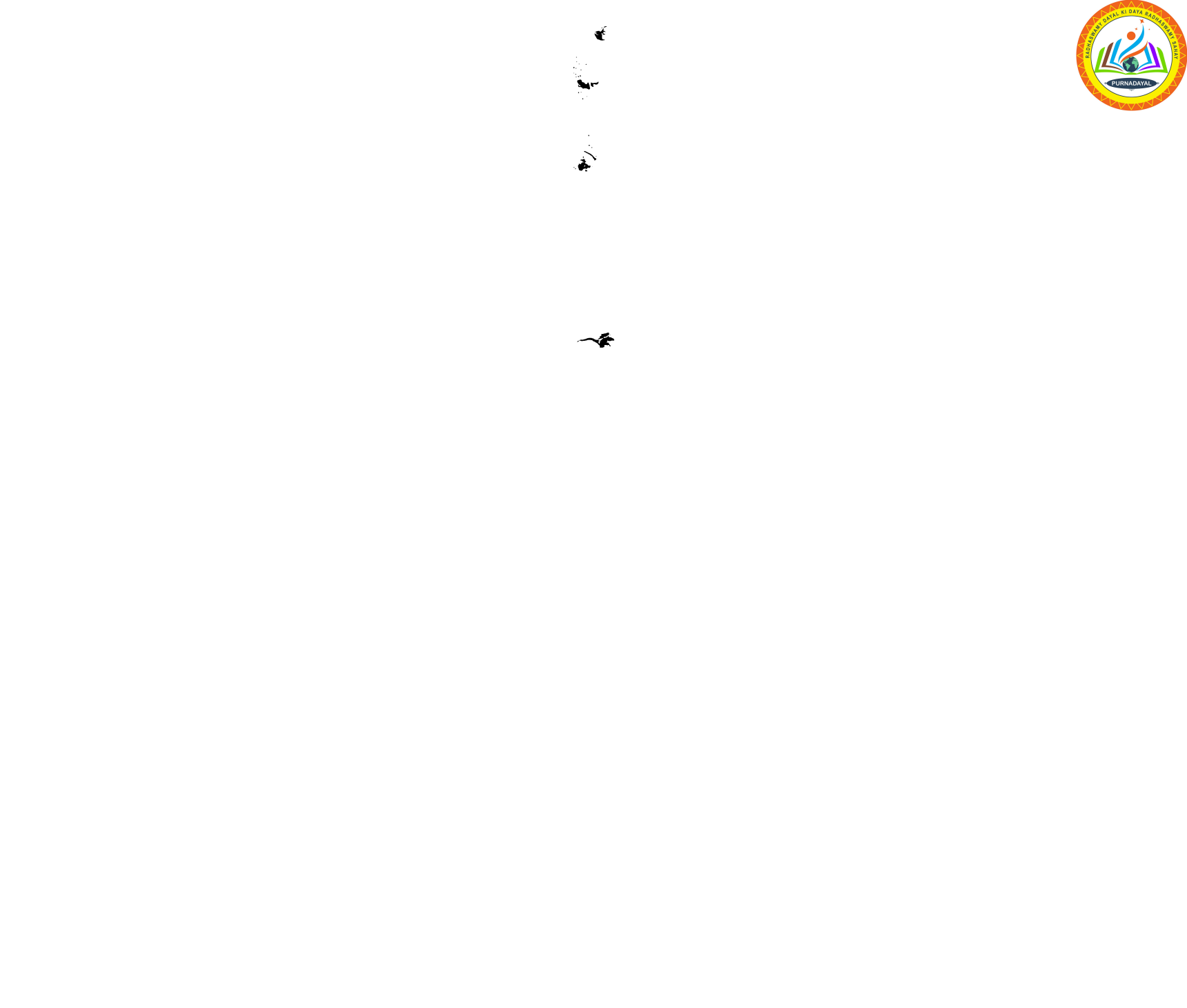

मासिक- -

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र।

सम्पादक :
श्री रवि नन्दा

वर्ष 20	सोमवार 10 मई, 1993	संख्या 1

धर्म का असली मन्तव्य और उच्च उद्देश्य

दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

हम धर्म के अनुयायी क्यों बनें और क्यों धर्म के बन्धनों की ज़ंजीर को अपने गले का तौक बनाएं? ऐसे 2 प्रश्न वहाँ किए जाते हैं, जहां धर्म की सच्चाई समझ में नहीं आती। जहां धर्म के असली उद्देश्य को न समझ कर लोग अन्धाधुन्ध धर्म का अनुसरण करते हैं, जहां धर्म का उद्देश्य केवल दिखावटी आडम्बर, दिखावटी पूजा और रस्म रिवाज तक ही सीमित रहता है। धर्म दासता को गढ़ने वाला कारखाना नहीं है, बल्कि वह तो आपके बन्धन काटने का रास्ता है, उपाय है। जो धर्म मनुष्य के मन, वाणी और विचार की स्वतन्त्रता को छीनता है, उसको अनुचित रूप से फंसाता है, बंधुआ बनाता है, वह धर्म कैसा! वह तो एक प्रकार का स्वांग हुआ। ऐसे धर्म के बन्धन को मनुष्य को शीघ्र से शीघ्र त्याग देना चाहिए, शीघ्र ही उससे मुक्त हो जाना चाहिए। ऐसे आडम्बर युक्त धर्म को अपनाने से मनुष्य की

बुद्धि मन्द हो जाती है, उसका हृदय अपवित्र हो जाता है और वह विस्तृत विचारों के उच्च क्षेत्र में पहुंचने के योग्य नहीं रहता। यही मुख्य कारण था कि प्राचीन काल से ही हिन्दुओं ने धर्म और दर्शन (Philosophy) को अलग 2 नहीं रखा, अलग 2 नहीं समझा, बल्कि उनको साथ ही साथ रखा।

आर्यवर्त्त में जो सदा से हिन्दुओं में धर्म: धार्मिक विचार और हर प्रकार की फिलास्फी का भण्डार रहा है, स्रोत रहा है उसमें प्रत्येक मनुष्य को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जिस मार्ग को अपनाए निर्भय हो कर उसके साथ 2 स्वतन्त्रता से निर्भय हो कर, उससे सम्बन्ध रखे। यहां धर्म के लिए रक्त पात नहीं किया गया और न ही धार्मिक विश्वास के कारण किसी को फांसी दी गई। यहां पर आत्मा के पुजारी तथा भौतिकता के पुजारी आस्तिक तथा नास्तिक सदा से अपनी ही प्रकृति के अनुसार धर्म का पालन करते रहे हैं। प्राचीन काल में आजकल की भाँति न कोई धार्मिक छेड़ छाड़ करता था और न ही कोई धर्म के कारण किसी का शत्रु होता था। हां परस्पर विचार परिवर्तन की दृष्टि से वार्तालाप अवश्य होता था। सत्यता ज्ञात करने के लिए अथवा शंकाओं के समाधान के लिए भी वार्तालाप होते रहते थे। लोग शान्तिपूर्वक तथा दिलचस्पी से ऐसी 2 बातों में भाग लेते थे। कटु वचनों का प्रयोग नहीं होता था और न ही किसी का दिल दुःखाया जाता था। किसी का जान बूझ कर अपमान भी नहीं किया जाता था। यही कारण है कि इस पवित्र भूमि में हर प्रकार

की विचार-धाराओं, दर्शन की शाखाओं को उन्नतिशील होने का अवसर प्राप्त हुआ। आपको यह सुनकर शायद आश्चर्य होगा कि इस विचित्र देश में प्राचीन काल में ही नास्तिक तथा अनिश्वरवादियों का भी अनादर नहीं किया जाता था, उनको भी सम्मान दिया जाता था। उनको सम्मान के साथ श्री के नाम से सम्बोधित किया जाता था।

प्रसिद्ध षट दर्शनों में सांख्यशास्त्र के लेखक कपिल को जो कि ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे, न ही केवल ऋषि की पदवी से सुशोभित किया गया, परन्तु उन्हें विष्णु का अवतार तक माना गया। इस महापुरुष ने जो संसार में दर्शन का निर्माता और रचना के कारणों को पड़ताल करने वाला माना जाता है, आध्यात्मिक गूढ़ विषयों और रहस्यों का उत्तर मानव बुद्धि के अनुसार ही दिया है। उनके नाम को आदर से लिया जाता है तथा धार्मिक तथा दार्शनिक ज्ञान के जिज्ञासुओं को सर्वप्रथम कपिल की ही विचारधारा के अध्ययन का आदेश दिया जाता है। वेदान्त जो दार्शनिक विचार की सीढ़ी माना जाता है, अपने गौरवशाली भवन को अलग ही बनाता है और सन्सार की कुल विचारधाराओं को बड़े साहस के साथ कल्पित बताता है। पहला द्वैतवाद है दूसरा अद्वैतवाद। परन्तु आपको एक भी ऐसा वेदान्ती नहीं मिलेगा जिसने सर्वप्रथम कपिल के साँख्य का अध्ययन न किया हो। इसी एक बात से, एक उदाहरण से आपको समझ में आ जाना चाहिए कि धर्म के हेतु वहाँ कभी लड़ने झगड़ने की आवश्यकता नहीं हुई। आर्यवर्त में सभी इस बात को आरम्भ

से ही समझते थे कि मनुष्य भिन्न 2 प्रकार की प्रकृतियां रखने के कारण केवल एक ही प्रकार का धार्मिक विचार नहीं रख सकते, एक ही प्रकार का धार्मिक विचार सब को आकर्षित नहीं कर सकता। हर व्यक्ति को यह स्वतन्त्रता होनी चाहिए कि वह जिस मार्ग को पसन्द करे, उसे ही ग्रहण करे और अपनी आध्यात्मिक उन्नति का उपाय सोचे। मानव बुद्धि की गढ़त की श्रेणियों की दृष्टि से धार्मिक भिन्नता का होना स्वाभाविक है। जिस प्रकार, भिन्न 2 पाठशालाएं विशेष 2 प्रकार की शिक्षा देती हैं इसी प्रकार धार्मिक मार्ग भिन्न 2 क्षेत्रों के लिए अपने उद्देश्य की पूर्ति कराते हैं। लड़के का धर्म, एक युवा का धर्म कभी नहीं हो सकता, पर लड़के की भी अपनी हैसियत और श्रेणी के लिहाज़ से महत्व है। धार्मिक लाभ के सभी अधिकारी हैं। सभी अपना 2 काम करते हैं और बुद्धि की उन्नति के साथ 2 उच्च आदर्श की ओर संकेत करते रहते हैं। धर्म केवल एक उद्देश्य की प्राप्ति का साधन या मार्ग है स्वयं उद्देश्य नहीं है। उद्देश्य और साधन में अन्तर होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि साधन के बिना उद्देश्य तक पहुंचना कठिन है। सड़क खुली है, इस पर चलने से इष्ट स्थान तक पहुंचना होगा। परन्तु यदि कोई मार्ग में ही लटक जाय, फंस जाय, उसे ही उद्देश्य समझ ले तो यह उसकी बड़ी भारी भूल होगी।

धर्म में जो पहले पहल आप पर बन्धन लगाए जाते हैं, वह आपको दास बनाने की दृष्टि से नहीं लगाए जाते, किन्तु यह एक ऐसा शिक्षा क्रम है, जिसकी सहायता से, मन का दमन करके या मन को काबू करके मार्ग पर चलने की शक्ति

आती है। धर्म का उद्देश्य यह है कि मनुष्य :---

1) प्रसन्न रहे और स्थायी आनन्द की अवस्था को प्राप्त करे।

2) वह अमर जीवन का अधिकारी हो।

3) वह ज्ञान की प्राप्ति करे।

मनुष्य स्वाभाविक रूप से चाहता है कि उसको

1) दुःख के भय से छुटकारा मिले।

2) वह कभी मरे नहीं।

3) वह अज्ञानी न रहे।

मानव की समस्त उन्नतियों का उद्देश्य केवल इन्हीं तीन बातों तक ही सीमित है, इनके अतिरिक्त और कोई चौथी बात है ही नहीं।

यदि धर्म की इन तीन बातों को भली भाँति समझ लिया जाय, तो धर्म का महत्व अवश्य समझ में आ जायेगा। धर्म का असली उद्देश्य यह है कि मनुष्य प्रसन्न रहे, अमर जीवन प्राप्त करे और ज्ञान के प्राप्त करने में उसकी सहायता करे।

नवम्बर 11-1980 को मानवता मन्दिर, होशियारपुर

में

परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़क़ीर चन्द जी महाराज द्वारा दिया गया सत्संग

राधास्वामी !

"सारी दुनिया" नामक पत्रिका, जो ब्यास से प्रकाशित होती थी, उसमें मैंने पढ़ा था, जिसमें लिखा था कि हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने एक सत्संग में कहा था, "सुनो भाईयो मेरे दुखड़े !" आज मैं भी कहता हूं "सुनो भाईयो मेरे दुखड़े !" उनके दु:ख कोई और होंगे मेरे कोई और। दु:ख तो सभी को होते हैं। दाता दयाल जी ने अपने पिछले दिनों में नौनिद्धराय नामक सत्संगी को एक पत्र लिखा था, "ख़ुदा मुझे इन सत्संगियों से बचाये।" मेरे दु:ख क्या हैं ? एक दु:ख तो यह है कि जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का विरोध करता है, इससे मुझे दु:ख होता है। दूसरा जब तुम लोग जा कर मेरी खुशामद या प्रशंसा करते हो,मुझे अवतार कहते हो, मालिकेकुल कहते हो, परमतत्व का अवतार कहते हो, तो इससे मुझे दु:ख होता है। यदि मैं लोगों की खुशामद भरी बातों में प्रसन्नता

का अनुभव करूं और उसको बोलने की आज्ञा दूं, तो वह मेरे जीवन को बिगाड़ने की कोशिश करेंगे। स्तुति प्रशंसा व निन्दा दोनों ही मेरे लिए दुःखदाई हैं। इसलिए मैंने अपनी ज़िन्दगी में जो कुछ भी काम किया वह सच्चाई से किया, अर्थात् न रोचकपना लिया, न भयानकपना। मैंने सदैव सच्चाई को अपनाया। जो कुछ मेरी समझ में आया साफ़ 2 कह दिया।

अब मेरे दुखड़ों का हाल सुनो। वर्षों पहले एक गद्दी-पति ने मुझे लिखा कि एक दिन वह अपने अन्तर में गया, वहां उसे महर्षि शिवव्रत लाल जी के दर्शन हुए। उन्होंने उस गद्दीपति को कहा, "तुम फ़कीरचन्द के पास जाओ और उसे कह दो कि वह खूब अभ्यास किया करे तथा सबके साथ प्रेम किया करे।"

मैंने उस गद्दिपती को लिखा, "महर्षि जी मुझे बहुत प्यार करते थे। यदि उन्हें मुझे कुछ कहने की ज़रूरत होती, तो वह मुझसे सीधे ही कहते, आपको उन्हें माध्यम बनाने की क्या ज़रूरत थी? आपके अन्तर कोई नहीं आया, दाता दयाल नहीं आए। यह तो आपके अपने ही मन का खेल था, अपने ही मन का चक्कर था। यह बात मैंने एक किताब में भी लिखी थी, जिसे पढ़कर उस गद्दी-धारी के एक सिन्धी शिष्य को बड़ा क्रोध आया। उसने मुझे अपशब्दों से भरा एक पत्र लिखा, कोई गाली बाकी नहीं छोड़ी। पत्र के नीचे लिखा था "सिन्धी"। परन्तु वह अपना पता लिखना भूल गया, जिसके कारण मैं उसके पत्र का जवाब नहीं दे सका। कितनी विडम्बना की बात है कि कोई भी व्यक्ति सच्चाई को सुनने के लिए तयार

नहीं।

थोड़े दिन की बात है कि एक विश्व हिन्दू सम्मेलन में बटाले के एक प्राध्यापक ने स्टेज पर आ कर कहा, "मानवता मन्दिर का संचालक पण्डित फ़कीरचन्द हिन्दू जाति का शत्रु है, क्योंकि वह अपने मन्दिर के स्कूल के अन्दर केवल उन बच्चों को दाख़ल करने की इजाज़त देता है, जिनके माता पिता यह लिख कर दें कि वे तीन बच्चों से अधिक बच्चे पैदा नहीं करेंगे। यदि उनके तीन बच्चे पैदा हो चुके हैं, वे और बच्चे पैदा नहीं करेंगे। यह बन्धन हिन्दू जाति पर क्यों लगाया जाय? मुसलमानों पर क्यों नहीं? यदि फ़कीर की बात को मान लिया जाय तो कुछ समय बाद हिन्दुओं की संख्या कम हो जायेगी। दूसरी जातियां बहुमत में हो जायेंगी और वे हमारे ऊपर शासन करेंगी।" जिस राजनैतिक दृष्टिकोण बटाला के उस प्राध्यापक ने यह बात कही, मैं उससे सहमत हूं। मगर फ़कीरों का किसी राजनैतिक विचार से सम्बन्ध नहीं होता। मैं किसी को नाराज़ नहीं करना चाहता, यह हैं दुखड़े, जो मैं आपको सुना रहा हूं।

कल ही एक व्यक्ति ने लुधियाना से मुझे एक पत्र लिखा, जिसमें लिखा था, "आप कहते हैं कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। आप कहते हैं कि मैंने तालीम को बदल दिया। आप कहते हैं कि गुरु नाम ज्ञान का है, समझ का है, विवेक का है। यह बात तो कबीर साहब न

बहुत पहले कही थी :---

गुरु किया है देह को,
सतगुरु चीह्ला नाहिं ।
कहें कबीर वा दास को,
तीन ताप भरमाहिं ॥

सनातन धर्म वाले भी कहते हैं "गुरु अखण्ड मण्डलाकारं"। यह सब तो पहले से ही लिखा हुआ है। आपने नई बात क्या कही ?"

मैं कहता हूं कि उस व्यक्ति ने ठीक ही लिखा। मगर मैं पूछता हूं कि इस समय कौन सत्संगों द्वारा, यह सच्चाई बताता है। केवल किताबों में लिखो हुई बातों का हवाला देने से क्या होता है ? कोई सच्चाई तो बताता नहीं और न हो कोई जो ज्ञान गुरु दे गए, उस पर कोई चलता है। इसलिए ही मैंने विवश हो कर स्पष्ट बातें करनी पड़ रही हैं। इस समय अधिकतर गद्दीपति हम लोगों को अपने जाल में फंसाने का प्रयत्न करते हैं, हमें आज़ाद करने का प्रयत्न नहीं करते। इसका परिणाम क्या होता है ? इसका परिणाम होता है पक्षपात, झगड़ा। कोई नुक्ताचीनी करता है, कोई ग़लत ढंग से चापलूसी करता चला जाता है। मैं इन विचारों से दुःखी हूं।

सभी चाहते हैं कि धार्मिक पक्षपात व धार्मिक द्वेष होना ही नहीं चाहिए। मगर यह कैसे सम्भव हो सकता है। तुम लालच दे कर, प्रलोभन दे कर, डरा धमका कर, हिन्दू मुसलमानों को इकट्ठा तो कर सकते हो, परन्तु इकट्ठा करने मात्र से क्या उनके हृदय का

परिवर्तन किया जा सकता है ?

1921 में महात्मा गांधी ने हिन्दू मुसलमानों को एक प्याले में पानी पिलाया। उनको स्वतन्त्रता और स्वराज्य का लालच दिया। क्या इससे हिन्दू मुसलमान भाई भाई हो गए। 1947 में क्या हुआ? हिन्दुओं व सिक्खों ने बड़ी बेरहमी से मुसलमानों के सिर काटे और मुसलमानों ने हिन्दुओं तथा सिक्खों के। क्या असर हुआ एक प्याले में पानी पीने का? इस रक्तपात को देख कर मैं बहुत दुःखी हुआ और मैंने 'इन्सान बनो' की आवाज़ उठाई और कहा, "ऐ इन्सान! तू सोच कि तू कौन है, कहाँ से आया है और कहाँ जाएगा? जब तक 'ममुष्य बनो' की शिक्षा आम जनता में नहीं फैलती, आप लाख प्रयत्न करें धार्मिक पक्षपात तथा धार्मिक संकीर्णता दूर हो ही नहीं सकते। यह काम महात्मा तथा सन्त ही कर सकते हैं। वे दुनिया में Unity of Humanity and Unity of Religion के लिए और इन्सान के भ्रम और संशय दूर करने इन्सान जहाँ से आया है, वहां पहुंचने के लिए ही अपने कर्म करने हैं।

धर्मों, सम्प्रदायों और पन्थों के संचालकों ने लोगों को पूरी 2 सच्चाई नहीं बताई, जिसका परिणाम हुआ आपस में द्वेष भाव, ईर्ष्या तथा नफ़रत।

सच्च पूछो तो गुरु महात्मा गुरुपना या गुरुआई लोगों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए नहीं करते, बल्कि अपनी हकूमत, मान तथा प्रतिष्ठा के लिए हीकरते हैं गृहस्थियों को मूर्ख बना कर उन्हें लूटते हैं। अमल और अपने कर्मों को

ठीक करने की जो शिक्षा धर्म, पन्थ या सम्प्रदायों के महात्माओं तथा गुरुओं को देनी चाहिए थी, वह दी नहीं जा रही, जिसके कारण भोलेभाले अज्ञानी जीव संसार में भिन्न 2 प्रकार के दु:ख उठाते हैं। हम कर्म के सिद्धान्त को तो मानते हैं, परन्तु सुबह से लेकर शाम तक हम किस प्रकार के काम करते हैंउसके विषय में कभी सोचते नहीं। मैं केवल इस बात पर ज़ोर देता हूं कि अमल करने से ही कल्याण होगा। केवल राम राम, कृष्ण कृष्ण या गुरु 2 की रट लगाने से किसी का भी कल्याण नहीं होगा। हरगिज़ नहीं होगा कल्याण। "ऐ इन्सान! तू इस बात को भूल जा कि तू सुबह से शाम तक माला जपता है, कानों में उंगलियां डाल कर समाधियाँ लगाता है। समाधियाँ लगाने से आनन्द, मस्ती व खुशी मिलेगी इसमें सन्देह नही है। परन्तु दिन भर में तुम जो कर्म करते हो, उनके फल से तुम हरगिज़ नहीं बच सकते। इसलिए ही मैं बार-बार कहता हूं कि ऐ इन्सान! अपनी नीयत को तू साफ़ रख, अपने अमल और अपने कर्म को ठीक कर, वरना तू लाख किसी गुरु या खुदा का भी शिष्य बन जा फिर भी जो कर्म तूने किए हैं, उनसे तू बच नहीं सकता। कभी भी बच नहीं सकता।

मैं आपको अपने दुखड़ों के विषय में बता रहा था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, "ऐ फ़कीर! तूने यह मुसीबतें अपने सिर पर क्यों ली? बदनामी अलग सहता है। लोग प्रशंसा भी करते हैं, चापलूसी भी। यदि लोगों की प्रशंसा करने पर तू खूशी से फूल जाता है, तब तो डूब ही गया। फिर सोचता हूं कि मैं इस उलझन में पड़ा ही क्यों? यह मेरे कर्म हैं। जब तक औरत एक आदमी को अपना पति

मान लेती है और आदमी उसको पत्नी मान लेता है, इससे दोनों के ऊपर एक ज़िम्मेवारी आ जाती है। बचपन से दाता दयाल पर मेरा विश्वास था मैं उन्हें मालिक का अवतार मानता था, वह अवतार थे या नहीं, परन्तु मैंने तो उन्हें अवतार ही माना, अब जो आजा उन्होंने मुझे दी, उसका मानना मेरे लिए आवश्यक हो गया।

अब अगर मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता तो मैं दोषी हूं। इसलिए जीवन की अन्तिम सांस तक मैं उनका ही काम करूंगा, करता चला जाऊंगा। मुझे आलोचना और विरोध का बिल्कुल ही भय नहीं तथा न ही मुझे प्रशंसा की ज़रूरत है। इस काम को करने में सुखी नहीं हूं। लोग व्यर्थ में ही मेरी पीठ के पीछे नुक्ताचीनी करते हैं। मेरे सामने आ कर नुक्ताचीनी क्यों नहीं करते। मैं चाहता हूं कि वे मेरे सामने आ कर मेरी ग़लती हो तो मुझे बताएं। मैं अपनी ग़ल्तियों को मानने के लिए तैयार हूं।

मैंने अपने जीवन में अपनी छाती पर पत्थर रख कर, यह बात सहन करने की कोशिश की कि स्वामी जी और कबीर साहब को क्या हक था कि उन्होंने सब धर्मों, सम्प्रदायों तथा पन्थों का खण्डन किया। अब मैं समझ गया हूं कि जो खण्डन उन्होंने किया वह ठीक था, सच्च था। जिस नियम पर उन्होंने यह खण्डंन किया, उसी ही नियम पर वर्तमान सन्तमत के अनुयायी भी खण्डन के योग्य हैं। यह जितने भी गद्दी वाले हैं, या उनके शिष्य हैं वह पक्षपात करते हैं। क्यों करते हैं वह पक्षपात ? क्योंकि उनको सच्चाई कभी बताई नहीं गई। वे जानते नहीं कि गुरुमत क्या चीज़ है,

गुरु का रूप क्या है, गुरु कहते किसे हैं ?

मुझे भी पहले इसके विषय में सच्चा ज्ञान नहीं था। मुझे भी उस गुरु या मालिक के रूप का पता तब लगा, जब मुझे यह यकीन हो गया कि मेरे अन्दर जितनी शक्लें बनती थीं, जितने रूप आते थे, वे सब के सब मेरी अपनी ही कल्पनाएं थीं, मेरे अपने ही मन के खेल थे। वह गुरु का रूप जो मेरे सामने आता था, वह मेरे अपने ही मन की कल्पना थी। जब मुझे यह ज्ञान हुआ तब से मैं मन को छोड़ जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द है। उस प्रकाश और शब्द में, उस वस्तु की तलाश करता हूं, जो प्रकाश को देखती तथा शब्द को सुनती है। कभी 2 तो ऐसी हालत आ जाती है, जहां मैं तथा तू नहीं रहते, गुरु नहीं रहता, चेला नहीं रहता, न स्वामी रहता है, न सेवक, न अपनी हस्ती होती है। वही अवस्था हमारी आद है, वही गुरु है। गुरु हमसे अलग था ही कहां ? गुरु तो हमारे अन्दर ही था। हम व्यर्थ में ही उसे हरिद्वार या गद्दीधारियों में ढूंढते फिरते थे। भ्रम था, अज्ञान था, उसे दौड़ 2 कर बाहर ढूंढते फिरते थे। बाहरी गुरु का क्या काम है ? उसका काम यह है कि वह अपने शिष्यों के भ्रमों को दूर करके उसे अपने निज घर का रास्ता दिखला दे। उसे अपने ही रूप में ठहरा दे। जो गुरु ऐसा व्यवहार करके अपने शिष्यों को इस मंज़िल तक पहुंचा देता है, उसे बाहरी गुरु कहते हैं। बाहरी गुरु और चेलों का बस इतना ही सम्बन्ध है इससे अधिक नहीं। कोई भी गुरु किसी को भी पुत्र या सांसारिक वस्तुएं नहीं देता, नहीं दे सकता। जो कुछ भी किसी को मिलता है, वह उसके विश्वास, श्रद्धा, व निष्ठा का ही फल होता है। मैंने

अनुभव किया है कि इस दुनिया के झगड़ों में क्या कुछ नहीं हो रहा है। मुसलमानों के अन्दर मोहम्द या हज़रत अली प्रगट हो गया, उसने अपनी बुद्धि से समझा कि मोहम्द या अली स्वयं आ गया। इसी तरह हिन्दू समझते हैं कि राम या कृष्ण प्रगट हुए या गुरु प्रगट हुए। इस प्रकार के अज्ञान के कारण, माया के चक्र में आकर मानव जाति टुकड़ों 2 में बट गई। इस बांट का जो परिणाम निकला, आप लोगों ने पाकिस्तान बनने से पहले और बाद में देख लिया। इन सब धार्मिक झगड़ों का कारण क्या है? कारण यह है कि मुसलमान को न मुसलमानपने का सच्चा ज्ञान है और न ही हिन्दुओं को हिन्दुपने का। इन झगड़ों को समाप्त करने के लिए ही तो सन्तों का जन्म होता है। सन्त प्रगट होते हैं और आवाज़ देते हैं कि इस तंगदीली तथा मूर्खता से बचो। सन्त फ़कीरों के यहां हिन्दू, मुसलमान का कोई भेद नहीं होता वह तो बस इन्सान को इन्सान ही समझते हैं।

मैं आपको शपथपूर्वक कहता हूं कि मैं किसी को सिवाय शुभ कामनाओं के कुछ नहीं देता। जो कुछ आपको प्राप्त होता है यह आपके विश्वास, श्रद्धा तथा निष्ठा का ही फल है। जिन लोगों का विश्वास पक्का होता है, उनके काम बन जाते हैं। जिनके विश्वास में तनिक भी सन्देह उत्पन्न हो जाता है, उनके काम नहीं बनते।

लुधियाने वाले सज्जन ने एक प्रश्न यह भी लिखा था कि मैं नाम क्यों नहीं देता। क्यों? क्योंकि आपके कथनुसार जबलपुर की औरत की घटना उसका कारण था। उस औरत के आपसे नाम लेने के बाद दोनों बेटे एक वर्ष के अन्दर ही मर गए थे। वह लिखता है, "उस औरत के

भाग्य में ही यही लिखा होगा कि उसके बेटे मर जायेंगे। आपके पास इस बात का क्या सबूत है, कि उसके अचेतन मन में समाधि लगाने की इच्छा तथा बच्चों का समाधि में विघ्न डालना ही उनकी मृत्यु का कारण बना। उनकी मौत का समय आ गया होगा, इसलिए ही वे मरे यह भी तो सम्भव है।"

जो कुछ भी उस लुधियाने वाले व्यक्ति ने लिखा ठीक ही लिखा। उसके बच्चे मरने होंगे, उनकी आयु लम्बी नहीं होगी, इसलिए वे चले गए। परन्तु जो कुछ होना होता है, तो उसका कोई न कोई कारण बनता है। जो कुछ भी हमारे साथ घटता है, उसका कोई न कोई कारण होता है। मेरी बात को समझने की कोशिश करो। मैं आपको जो कुछ कहना चाहता हूं, उसे समझाने के लिए मुझे उपयुक्त शब्द नहीं मिलते। किसी आदमी के साथ कोई घटना घटी, उसके साथ ऐसा होना ही था, उसका बहाना कोई न कोई बन ही जाता है। ऐसा भी सम्भव है कि उत औरत के तीनों बेटे मरने ही थे और उस औरत के अभ्यास का गलत तरीका उनकी मौत का कारण माना गया, इसका उत्तर यह है।

जिसने लुधियाने से मुझे यह पत्र लिखा है या जो नुक्ताचीनी करना चाहते हैं, मैं उन्हें कहना चाहूंगा कि कर्म के प्रभाव से कोई नहीं बच सकता :

कर्म जो जो करेगा तू,
अन्त में भोगना पड़ना।

वेदों तथा शास्त्रों ने भी यही कहा है, "शुभ संकल्प

अस्तु", मगर उसको कौन सुनता है ? हम प्रतिदिन संध्या करते हैं, कहते हैं, "हे प्रभो ! जिससे हम शत्रुता करते हैं या जो हमसे शत्रुता करते हैं हम दोनों की शत्रुता के भाव जला दो।" अब मैं आपसे पूछता हूं कि जितने भी हिन्दू हैं, आर्य समाजी हैं, सनातन धर्मी हैं, या किसी और पन्थ या सम्प्रदाय के हैं क्या वे इस प्रार्थना पर अमल करते है। क्या वे शत्रुता को दूर करने की कोशिश करते हैं ? वही पुराने संस्कार, वही 'शिव संकल्प अस्तु' आदि को मैंने बहुत ही सरल भाषा तथा सरल ढंग से संसार के सामने पेश किए हैं। हो सकता है, मेरे बताने का ढंग ग़लत हो, या मैंने जो समझा है, वह ग़लत हो, मगर मेरी ज़मीर मुझको आज्ञा नहीं देती कि मैं यह समझूं कि मैं ग़लत हूं। मेरे जिम्मे एक जिम्मेदारी की जो मेरे पूज्य गुरु ने मुझे सौंपी थी मैं उसको पूरा कर रहा हूं। मैं बार-बार यह कहता हूं, "ऐ भारतवर्ष के धार्मिक नेताओ, व दुनिया वालो ! यह तुम्हारी घृणा, धार्मिक घृणा, धार्मिक दोष, वर्तमान की विषैली राजनीति, यह वैर तथा एक दूसरे का विरोध, तुम्हारी जान को तो क्या तुम्हारे खून को पी जायेगा। यदि तुम आज नहीं समझते तब क्या होगा :—

अब पछताये क्या बने,
जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

आप लोग मेरे पास आते हैं। मैं आपको सच्चे दिल से अपने भावों को प्रगट करता हूं और कहता हूं कि प्रत्येक इन्सान, चाहे वह सन्त हो, परमसन्त हो, महात्मा हो, अवतार ही क्यों न हो, कोइ न कोई ग़लती ज़रूर

खोजा है। कोई भी शरीरधारी, जब तक कि वह शरीर में है, वह मन के दायरे में आएगा ही, वह कभी पूर्ण नहीं हो सकता। पूर्ण तो केवल एक मालिक ही है। बस हम सब प्राणियों को शरणागत हो जाना चाहिए।

"ऐ मेरे प्यारे सत्संगियो! मैं भी किसी समय दुःखी होता हूं और रोता हूं। हो सकता हैमैं ने जो कुछ भी समझा गलत हो। परन्तु मैं एक सत्यप्रिय व्यक्ति हूं। मेरी नीयत एकदम साफ़ है। मान लो मैंने जो कुछ किया, गलत ही किया तो मैं क्या करूं? इस विषय में मैं जिम्मेबार नहीं। बाबा सावन सिंह तथा दाता दयाल ही जानें, जिन्होंने मुझे यह काम दिया। उनसे जाकर ही पूछो। हे मेरे प्यारो! मैं अपनी तरफ़ से जो कुछ भी कहता हूं, सच्चे दिल से कहता हूंऔर आप लोगों की भलाई के लिए ही कहता हूं। मैंने आज अपने दुःखड़े आपको कह दिए। आज मैं फिर आपको याद दिला रहा हूं कि मैंने तो जिन्दगी की आखिरी सांस तक अपनी गुरु द्वारा दी गई जिम्मेवारी को निभाना ही है। चाहे लोग मेरा लाख विरोध करें, मेरी नुक्ताचीनी करें, चाहे मेरी प्रशंसा करें, फूलों की मालायें मेरे गले में डाल कर मेरा सम्मान करें, मुझे इससे कोई लेना देना नहीं है। मैं तो बस अपना काम ही करता चला जाऊंगा। मैं अपनी जिम्मेवारी को निभाने से चूक नहीं सकता।

दाता दयाल महाराज के चोला छोड़ने के बाद मैं 1942 में बाबा सावनसिंह जी के पास गया और बोला, "हजूर! मेरी जो जिम्मेवारी मेरे गुरु मुझे सौंप गए हैं मैं उसको निभाऊं या यह काम छोड़ दूं, क्योंकि मैं झूठ बोल नहीं

सकता ? बाबा सावन सिंह जी ने बड़े प्यार से कहा "फ़कीर। मुझसे पूरा सच्च नहीं कहा गया। दुनिया इसकी अधिकारी नहीं है। तुम खुल खेलो, निर्भय हो कर काम करो। मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा" उन्होंने मेरी पीठ पर दया का हाथ रखा। यह बाबा सावन सिंह जी महाराज की दया है कि आज दिन तक किसी भी गद्दी वाले ने मुझे कोई भी हानि नहीं पहुंचाई। अगर उनकी दया नहीं होती, तो पता नहीं मेरा क्या होता ?

मैं जिस मार्ग पर चलता आया हूं और चलता जा रहा हूं, वह सच्चाई का मार्ग है, मानवता का मार्ग है। न मैं किसी की खुशामद करता हूं और न ही किसी से डरता हूं, सच्चाई बताए चला जा रहा हूं, असलियत क्या है इसे समझाने की कोशिश करता हूं। वह सच्चाई या असलियत क्या है ? वह सच्चाई वही है जो राधास्वामी दयाल या कबीर साहब ने बतलाई, या हमारे शास्त्रों ने बतलाई। मैंने कोई नई चीज़ नहीं बतलाई।

आप लोग यहां आते हो बड़ी प्रसन्नता की बात है। मैं आपको एक बार फिर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि ऐ मेरे प्यारो! इस भरोसे पर कभी मत रहना कि क्योंकि तुमने गुरु धारण कर लिया है, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यदि तुम्हारा आचरण ठीक नहीं है तुम्हारा अमल ठीक नहीं है तो केवल गुरु तो केवल गुरु धारण करने से कुछ लाभ नहीं होगा।

सुनो मेरी बात एक रहस्य की बात बताता हूं। अपने अन्तर सुबह शाम सच्चे दिल से पुकार किया करो अपने इष्ट के सामने और अपने आप को उसके समर्पित करो। जहां

तुम सच्चे बने, प्रकृति तुम्हारी हर प्रकार से सांसारिक तथा पारमार्थिक सहायता करेगी। यह मेरी अपनी ज़िन्दगी का तजुर्बा है। अपने इष्ट को जो भी हो वह उसे पूर्ण मान लो, तुम्हारे सारे काम बन जायेंगे। इधर उधर मत भटका करो, अपनी नीयत को पाक तथा साफ़ रखो। जैसी तुम्हारी नीयत होगी वैसी ही मुराद मिलेगी। लोगों को अपने ही विश्वास, सच्चे प्रेम और श्रद्धा का फल मिलता है। मैं या कोई और गुरु किसी को कुछ नहीं देता, तुम्हारे अन्दर ही सब कुछ है, तुम्हारी काया में ही सब संसार है। उसमें राम भी हैं, कृष्ण भी हैं. देवी देवता भी हैं और गुरु भी है। सच्चे बने रहो। माँगो, वह मालिक देता है, वह तुम्हारा हर समय का साथी है। जब जब अकेले बैठते हो अपने अन्दर से पुकार करो अगर आपके कष्ट दूर न हों तो मैं ज़िम्मेवारी लेता हूं।

नाम दान की प्रदानता

परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज का

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

में प्रातःकाल 12-4-92 को वैसाखी के उत्सव पर सत्संग

नामदान प्रदान कीजे,
गुरु दीन दयाल ।
चरन का नित ध्यान सुमिरन,
चित न व्यापे काल ॥
सर्व समरथ सर्व अंग संग,
सर्व जगत् आधार ।
शुद्ध मन से पद कमल को,
करूं निस दिन प्यार ॥
सिंधु भव अति अगम दुस्तर,
सूझे वार न पार ।

बिकल मन रहे सोच छिन छिन,
कैसे जाऊं किनार ।।
दया कीजे मेहर कीजे,
लीजे चरन लगाय ।।
भक्ति दीजे तार लीजे,
कीजे मेरी सहाय ।।
शब्द में रत रहूं पल-पल,
सुरत पावे चैन ।।
राधास्वामी दया सागर,
भजूं मैं दिन रैन ।।

नन्दितानि दिगन्तानि, यस्यानन्दाम्बुबिन्दुना ।।
पूर्णानन्दं प्रभुं वन्दे, स्वानन्दैक्य स्वरूपिणं ।।
मस्तराम सुतं देवं, फ़कीरचन्दं पण्डितम् ।
परमसन्त दयालं च, फकीरं वन्दे जगदगुरुम् ।।

राधास्वामी :

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप, सद्गुरु रूप उपस्थित सत्संगी भाइयो और बहनो !

आज वैसाखी सत्संग के सिलसिले में यह पहला सत्संग है। परमदयाल जी महाराज ने सत्संग का यह सिलसिला वैसाखी के अवसर पर शुरू किया था। उस समय से लेकर उस समय तक, जब तक महाराज जी ने चोला नहीं छोड़ा, यह सिलसिला जारी रहा। इस अवसर पर बहुत से दूसरे धर्मों के आचार्य भी आते थे और अपने विचार प्रगट करते थे। परमदयाल जी महाराज का यह मकसद था कि वह सभी धर्मों के आचार्यों को यह बता देना था कि उनका अनुभव

उनकी खोज कहां तक सच्ची है। वह कहते थे कि "अगर मेरा अनुभव ग़लत है, तो मुझे कोई बताए।" मगर किसी ने भी उनको ग़लत नहीं बताया। बल्कि उनके अनुभवों को पुष्ट किया।

परमदयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद, जब मैं दिल्ली में सत्संग देने के लिए आया तो मैंने कहा "परम दयाल जी महाराज कहते थे कि "यदि किसी के मन में शंका हो, तो मुझसे प्रश्न करें।" मगर आज मैं भी वही बात दोहराता हूं कि यदि किसी को शंका है, तो अपनी शंका का को समाधान मेरे से करले।" वैसाखी का यह सन्त सम्मेलन सब लोगों के भ्रम को मिटाने के लिए होता है। परमतत्वाधार, मालिकेकुल जो सद्गुरु के रूप में आता है, उसका यही मकसद होता है कि वह लोगों के सब भ्रमों को समाप्त कर दे। सारी दुनिया भ्रम में पड़ी हुई है। अपने आपको पहचान नहीं पा रही। वास्तव में, हर एक जीव उसी सर्वाधार परमतत्त्व अविनाशी का अंश है, जो इस सारे जगत् को चलाता है। जो शक्तियां उस मालिक के अन्दर मौजूद है, वही शक्तियां मनुष्य के अन्दर भी मौजूद हैं, मगर जीव इस बात को भूल गया। इसीलिए मालिक हर युग में हर समय को ज़रूरत के मुताबिक आता है और जीवों को चिताता है। सन्त तुलसीदास जी ने भी यही कहा है :---

नाना विधि राम अवतारा।
रामायण शत कोटि अपारा॥

उस परम तत्व के अवतार अनेक होते हैं और वह जीव के हर प्रकार के भ्रमों को मिटाते हैं। उनका भ्रमों

कौं मिटाने का, जीवों को चिताने का तरीका अलग - अलग होता है। रामायण क्या है ? रामायण--राम का जीवन चरित्र है। रामायण शत कोटि अपारा। मालिके कुल समय के मुताबिक अपना चोला बदलता रहता है।

जमी बदलती है आसमां बदलता है।
मुकी मकां जो बदले समां बदलता है।
नहीं है एक बतीरा थे यह जहां कायम।
बदलते रहते हैं सब, जब सारा जहा बदलता है।

यह पंक्तियाँ दातादयाल जी महाराज की है। वह कहते हैं जमी बदलती है, आसमान भी बदल जाता है। यह जगत् परिवर्तनशील है। इस जगत् की हर चीज़ बदलती है। जो चोज़ एक युग के अन्दर लाभदायक होती है, वह दूसरे युग के अन्दर लाभदायक नहीं होती। इसलिए चारों युगों में अलग - अलग दृष्टिकोण से अवतार हुए और उन्होंने लोगों को चिताया। सतयुग के अन्दर ध्यान की विधि थी त्रेता युग के अन्दर जग की विधि थी, द्वापर युग में पूजा की विधि थी और कलियुग के अन्दर नाम का आधार है। जगत में बदलाव होता रहता है। जगत् क्या है ? जगत् गौ धातु से चलने वाला है, अर्थात् जो लगातार चल रहा है। वह एक क्षण में कुछ है और दूसरे क्षण में कुछ है। इसोलिए सारे जगत् का इतिहास बदलता रहता है।

मुकी मकां जो बदले समां बदलता है

इस शरीर रूपी मकान में रहने वाले भी बदलते हैं। एक सतगुरु गया, दूसरा आया। माहौल बदल जाता है। सच बात तो यह है कि सतगुरु जहां भी जाता है, वहां का सारा माहौल आत्मिक हो जाता है। सौ योजन तक उसका प्रभाव पड़ता है। जब गुरु का रूप बदला तो समां

भी बदल जाता है।

नहीं है एक वतीरा पे यह जहां कायम

यह जगत् जो चल रहा है, वह एक सार नहीं है। बदलाव आता रहता है।

बदलते रहते हैं सब, जब सारा जहां बदलता है।

लेकिन इस बदलाव के अन्दर सतगुरु कभी नहीं बदलता। सतगुरु की निशानी है कि वह बुद्धि मतिधीर होता है।

उतते सदगुरु आइया, जाकी बुद्धि मतिधीर।
भवसागर के जीव को खेह लगावे तीर॥

पहले तो कबीर साहब ने कहा कि हमें यहां पर कोई भी सतगुरु दिखाई नहीं देता, जो हमें उस पार ले जाये।

उतते कोई न आइया, जा से पूछूं जाए।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय-लदाय॥

परमधाम से कोई व्यक्ति ऐसा नहीं आता, जिस से मार्गदर्शन लिया जाए। इधर से जो भी जाता है, उसके अन्दर कोई न कोई इच्छा, आसक्ति अथवा अहंकार आदि का बोझ लेकर जाता है। यह अहंकार इतना सूक्ष्म होता है कि सन्तों को और परमसन्तों को भी पता नहीं चलता कि वे अहंकार में हैं। अगर उनकी आसक्ति घर वालों में नहीं है, जायदाद से नहीं है, दुनियावी नाम से नहीं है और वह लोगों को नाम देने का काम करते हैं, लेकिन उनको इस बात का ध्यान होता है कि "मेरे इतने हज़ार चेले हैं। मेरा डेरा है। मैंने इतना बड़ा डेरा बनाया।" यही तो भार है जिसे लोग लदा - 2 कर जाते हैं। परमदयाल जी

महाराज ने तो यह भार शुरू से ही नही लदाया। एक बार भारद्वाज साहब ने बताया कि जब परमदयाल जी महाराज मन्दिर से अन्तिम बार जाने लगे तो उन्होंने मन्दिर को पलट कर नहीं देखा। बस इतना ही कहा :---

बुलबुल ने अपना आशिया चमन से उठा लिया
बला से बूम रहे या हुमा रहे ॥

उन्होंने अपना आशिमां शारीरिक रूप से हटा लिया था। बूम कहते हैं उल्लू को। चाहे इसमें उल्लू बसे या गरुढ़ रहे। परमदयाल जी महाराज को किसी से लाग लपेट नहीं थी। इसीलिए वह सचाई बोलते थे। उनके मन पर कोई बोझ नहीं था। उन्होंने किसी का खाया नहीं, किसी से कुछ लिया नहीं। लेकिन गुरु का काम करते थे। लेकिन जिन गुरुओं की आसक्ति संसार में है, वह ऊपर कैसे जा सकते हैं। इसलिए वह भार लदा - लदा कर जाते हैं। मगर कबीर साहब ने आगे कहा :—

उतते सतगुरु आइया,
जाकी बुद्धि मति धीर।
भव सागर के जीव को,
खेह लगावे तीर ॥

सद्गुरु की क्या निशानी है ? सद्गुरु की निशानी यह है कि दुनिया परिवर्तनशील है, बदलती रहती है, लेकिन वह नहीं बदलता। एक ही भाव में स्थित रहता है। उसकी बुद्धि टिकी हुई है, जिसको स्थितप्रज्ञ कहते हैं। भगवद्गीता के दूसरे अध्याय को बुद्धियोग कहा गया है, लेकिन वह असलियत में सुरत शब्द योग है। अगर सुरत शब्द योग

की पूरी व्याख्या कहीं की गयी है, तो वह गीता के दूसरे अध्याय में की गई है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा, "हे अर्जुन। तू घबरा रहा है, इधर उधर भटक रहा है, इसलिए तुझे बात समझ नहीं आ रही हैं कि तू क्या करे।" जब तेरी बुद्धि स्थिर हो जाएगी, जब तुम्हें, पता चलेगा कि सच्चाई क्या है? तब तुम्हें यह ज्ञान हो जाएगा कि तुम्हारी बुद्धि एक जगह टिकी हुई है, तब समाधिस्त हो जाएगा।" अर्जुन ने कहा, "महाराज। स्थित प्रज्ञ की परिभाषा क्या है? स्थितप्रज्ञा व्यक्ति बोलता कैसे है? कैसे व्यवहार करता है? इस सवाल का जवाब देते हुए भगवान कृष्ण जी ने उत्तर दिया :---

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञाप्रतिष्ठिता।।

जिस तरह से कछुआ अपने अंगों को अन्दर समेट लेता है, उसी प्रकार स्थितप्रज्ञ सतपुरुष जब अपनी ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान के विषय से हटा लेता है, उसकी बुद्धि टिकी हुई होती है। इसके बाद भगवान कृष्ण ने स्थितप्रज्ञ की परिभाषा अर्जुन को बतायी :---

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतराग भय क्रोधः स्थित धीर्मुनिरुच्येत।।

परमदयाल जी महाराज कहते थे कि किसी वीतराग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रखो। वीतराग पुरुष कैसा होता है? यह भगवान कृष्ण जी ने सुरत-शब्द योग में बता दिया। कौन कहता है कि कृष्ण नहीं पहुंचा। भगवान कृष्ण जी ने जब बता दिया कि स्थितप्रज्ञ क्या होता है? तो उन्होंने स्वयं अनुभव किया था, तभी तो बता दिया कि

स्थितप्रज्ञ क्या होता है ? दुखेष्वनुद्विग्नमना:---दु:ख आ जाए, कष्ट आ जाए उसका मन घबराता नहीं है। सुखेषु विगत-स्पृह: बहुत सुख आ जाए, आनन्द हो जाए सारी दुनिया की सम्पत्ति आ जाए, उसमें अपने आपको फुलाता नहीं है। जिसके अन्दर राग नहीं है, आसक्ति नहीं है, भय और क्रोध भी नहीं है, ऐसा व्यक्ति स्थितप्रज्ञ कहलाता है। इसलिए कबीर साहब ने कहा है कि परमधाम से आया हुआ सद्गुरु वह है, जिसकी बुद्धि टिकी हुई है। इसलिए मैं आपको कहता हूं 'जल्दी नहीं, चिन्ता नहीं, इससे आपकी बुद्धि स्थिर हो जायेगी। आप जितनी जल्दी करोगे, आपका काम उतना ही देर से होगा।

'भव सागर के जीव को खेह लगावे तीर'

इस जगत् के अन्दर आपके ऊपर कितने भी दु:ख क्यों न आयें, लेकिन सद्गुरु आपकी किश्ती को भव-सागर से बचाकर ही ले जायेगा। आज के मंगला-चरण में मैंने सतगुरु को प्रणाम किया है। गुरु कौन है ? गुरु वह है, जो परमानन्द है।

नन्दितानि दिगन्तानि यस्यानन्दाम्बुविन्दुना।
पूर्णानन्द प्रभुं वन्दे स्वानन्दैक्य स्वरूपिणां॥

सच्चिदानंद तो सब कहते हैं और सच्चिदानन्द की पूजा भी करते हैं, लेकिन पूर्णानन्द सद्गुरु जो चौथे पद में रहने वाला है, वह गुरु है। उसकी एक बूंद मात्र से सारे जगत् के अन्दर, सर्वत्र दस दिशाओं के अन्दर नन्दितानि अर्थात् आनन्द फैल रहा है। वह तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन उसका आनन्द फैला हुआ है। जब जीव ऐसे

गुरु की शरण में जाता है, तो उसको परमानन्द का अनुभव होता है। 'पूर्णनंदम गुरुवन्दे' ऐसा गुरु जिसके अन्दर कोई कमी नहीं है, जो पूर्णानन्द है, जिसका आनन्द कभी समाप्त नहीं होता, ऐसे गुरु को नमस्कार है। वह अपने अन्दर ठहरा हुआ है। वह एक ही भाव में रहता है, इसलिए कोई भी व्यक्ति उसे बुरा दिखाई नहीं देता है। ऐसे गुरु को नमस्कार है।

मैं आपको बता रहा था कि परमतत्वाधार इस जगत् में किसी मकसद के लिए आता है। लोगों के अन्दर भ्रम फैले हुए हैं। इन भ्रमों के कारण जीव को सर्वव्यापक परमानन्द का अनुभव नहीं हो रहा अगर उसकी बात को कोई सुने नो वह भ्रमों को दूर करके परमानन्द का अनुभव करने का तरीका बताता है। दातादयाल जी महाराज ने कहा है :--

सुनते नहीं हैं दुनिया के गाफ़िल मेरा कलाम।
बेदार होके कहता हूं, ताबीर ख्आब की॥

आप जो देख रहे हैं-यह एक स्वप्न है जिसे सच समझ कर, आप आसक्त हो रहे हैं। लेकिन जो सद्गुरु जागा हुआ है, वह कहता है :---

सुनते नहीं हैं दुनिया के गाफ़िल मेरा क़लाम

लोग गफ़लत में पड़े हुए हैं, जान बूझ कर मोह जाल में पड़े हुए हैं। जितना मोह बढ़ाते जाओगे, उतना ही बढ़ता जाएगा। उसका कोई अन्त नहीं है। यह जानते हुए भी हम उस मोह जाल को छोड़ते नहीं हैं। "एक पतगा भले ही अज्ञानवश अग्नि में जल मरे किन्तु हम मनुवय

ज्ञान रखते हुए भी मोह रूपी जटिल जाल को छोड़ते नहीं हैं सारा जगत मोह रूपी लापरवाही की मदिरा पीकर उन्मत्त है।

इसलिए दातादयाल जी महाराज ने कहा कि मैं जागते हुए कह रहा हूं यह ख्आब है। भई ख्आब तो है ही, लेकिन ख्आब को देखने वाला जो तत्व है, वह अविनाशी है, साक्षी है और यही साक्षी आपके अन्दर बैठा हुआ है। दुनिया बदलती है लेकिन वह अविनाशी नहीं बदलता। वह स्थाणु है, अचल प्रतिष्ठित है, टिका हुआ है। जब वह ज्ञान देता है, तो लोग सुनते नहीं हैं? भगवान बुद्ध कई वर्षो की तपस्या के बाद बुद्ध से प्रबुद्ध हो गए और उन्हें यह पता चल गया संसार में दुःख का कारण क्या है? तब उन्होंने सत्संग देना शुरू किया। उन्होंने यह बताया कि यह संसार दुःखमय है। मैंने अभी आपको बताया कि यह जगत् आनन्दमय है, लेकिन दुःखमय भी है। आनन्द तो सुख दुःख के पीछे है। भगवान बुद्ध ने यः नहीं कहा कि यह जगत् आनन्दमय नहीं है लोग कहते हैं कि महात्माबुद्ध बड़े निराशावादी थे। महात्मा बुद्ध ने यह अनुभव किया कि इस जगत् के अन्दर दुःख ही दुःख है। कबीर साहब ने भी कहा है :---

तनधर सुखिया कोई न देखा,
जा देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहत हैं,
सबका किया विवेका हो॥

इस शब्द के 'हो' में बड़ा अर्थ भरा हुआ है। इस जगत्

के अन्दर जो भी शरीर धारण करके आया, चाहे वह सद्गुरु हो, चाहे मनुवय हो, चाहे राजा हो, चाहे फ़कीर हो, सब दु:खी ही दु:खी हैं।

उदय अस्त की बात कहत हैं,
सबका किया विवेका हो।
हर ज़वाले बा कमाल,
हर कमाले बाजवाल ॥

जो नीचे है, वह ऊपर उठता है। जो ऊपर उठा हुआ है वह नीचे गिरता है। यही दुनिया का इतिहास है। कबीर साहब ने कहा, "सबका किया विवेका हो"। सूक्ष्म बुद्धि से जान लिया देख लिया कि जो उदय होता है, वह अस्त भी होता है। जो अस्त होता है वह उदय भी होता है। यह सच्चाई है।

घाटे बाढ़े सब जग दुखिया,
क्या गिरही वैरागी हो।
शुकदेव अचारज दु:ख के डर से,
गर्भ से माया त्यागी हो ॥

कभी आप ऊंचे पहुंच गए, कभी नीचे गिर गए। कभी आपका मान हो गया, कभी अपमान हो गया। कभी व्यापार से घाटा पड़ गया, तो कभी फ़ायदा हो गया। सभी दु:खी हैं, चाहे वह गृहस्थी है या वैरागी है। अब यहां पर एक इतिहासिक घटना को बताया गया है। शुकदेव ऋषि व्यास ऋषि जी के पुत्र थे। शुकदेव जी को मां के गर्भ में ही ज्ञान था कि जगत् में दु:ख होगा। इसलिए वह गर्भ

से बाहर नहीं आना चाहते थे। कहते हैं कि 12 साल तक वह मां के गर्भ में रहे। व्यास जी ने बड़ी प्रार्थना की "महाराज! आप बाहर तो आयें। आपको जगत्कल्याण का काम करना है तो कीजिएगा" शुकदेव जी ने कहा, "मैं बाहर इस शर्त पर आऊंगा कि आते ही मुझे जंगल में जाने की आज्ञा दी जाये।" व्यास जी ने आज्ञा दे दी। शुकदेव जी पैदा होते ही जंगल में चले गए। लेकिन उनको वहां भी चैन नहीं आया और घर में फिर वापिस आये। कहने का मतलब है कि दुःख सबको है।

जोगी दुखिया जंगम दुखिया,
तपसी को दुःख दूना हो।
आशा तृष्णा सबको व्यापे,
कोई महल न सूना हो॥

योगी योग की साधना करते हैं। इससे उनके अन्दर सिद्धि शक्ति आ जाती है, लेकिन वह सिद्धि शक्ति उनमें अहंकार पैदा करती है और वह भी दुःखी हो जाते हैं। 'जगम दुखिया' अर्थात् जंगलों में रहने वाले, दरबदर घूमने वाले भी दुःखी हैं। "तपसी को दुःख दूना हो।" अब तपस्या करने से सिद्धि शक्ति तो आती है। आप हफ्ते में एक बार मौन व्रत रखें, आपकी जुबान पर सरस्वती आ जाएगी, जो मुंह से कहोगे वह पूरा हो जाएगा। लेकिन जो सिद्धि शक्ति प्राप्त करते हैं, वह उसका प्रयोग नाम के लिए, पैसे के लिए करते हैं। ऐसे लोगों का अन्त अच्छा नहीं होता। अब दुःख दूना कैसे हो गया? एक तो शरीर को तपस्या के लिए दुःख दिया। फिर सिद्धि-शक्ति से अहंकार आ गया, इससे वह दुःखी हो गया।

आशा तृष्णा सब को व्यापे,
कोई महल न सूना हो ॥

तृष्णा कहते हैं इच्छा को, जो कभी समाप्त नहीं होती। अगर आप संसार के विषय भोगों से तृप्त होना चाहते हैं, तो कभी नहीं होंगे। अपने आपको विषय भोगों से तृप्त करने का मतलब है कि अग्नि में घी डालना। इस जगत् में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे आशा तृष्णा ने व्यापती हो। इसलिए सभी दुःखी हैं।

सांच कहो तो कोई न माने,
झूठ कहा नहीं जाई हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया,
जिन यह रह चलाई हो ॥

कबीर साहब कहते हैं कि सच्ची बात को कोई भी सुनना नहीं चाहता। यदि सुन भी लेते हैं तो लगता है कि यह सच्ची बात है, मगर मानने के लिए तैयार नहीं।

सुनते नहीं हैं दुनिया के ग़ाफ़िल मेरा कलाम।

गुलाम रहने की आदत पड़ी हुई है। अपने माथे घिसाते रहते हैं, कभी हनुमान जी के मन्दिर में, कभी देवी के मन्दिर में। उस गुलामी की कैद से छूटना नहीं चाहते। हालांकि आप पूर्ण हो, मगर आपको कैद ही अच्छी लगती है। मैंने कई बार सर्कस की मिसाल दी है। एक बार सर्कस के जानवर दूसरे स्थान पर जा रहे थे। रास्ते में एक्सीडेन्ट हो गया। शेर का पिंजरा गिर कर टूट गया। शेर बाहर निकला, थोड़ी देर घूमा और फिर वापिस आ कर

पिंजरे में बैठ गया। क्योंकि उसकी आदत पिंजरे में बन्द रहने को पड़ी हुई थी। लोग अपनी आदत को नहीं छोड़ते। यही कारण है कि सत्संग सुनने के बाद भी अपने चक्करों में पड़े रहते हैं।

सांच कहा तो कोई न माने,
झूठ कहा नहीं जाई हो ।

कबीर साहब ने सच्चाई को कलाम बद्ध कर दिया। वेद उपनिषद वेदान्त सब का गान बता दिया। जो मालिक से मिला हुआ है, वह झूठ कैसे बोले।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया,
जिन यह राह चलाई हो।

तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव, मालिक के तीन रूप हैं। इन तीनों के अन्दर सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण है। जब तक यह जगत् है,तब तक यह तीनों देवता फंसे हुए हैं। ब्रह्मा को हर समय सृष्टि करने का दुःख है। विष्णु को सृष्टि के पोषण की चिन्ता है और शंकर जी को चिन्ता है कि इस सृष्टि को समाप्त करके सबको मोक्ष में ले जाना है। यह तीनों भी दुःखी हैं।

अवधू दुखिया, भूपति दुखिया,
रंक दुःखी क्विरीति हो ।
कहें कबीर सकल गग दुखिया
सन्त सुखो मन जोती हो।

अवधू वह होता है जो पूजा पाठ नहीं करता, मगर जानता है कि मालिक सब कुछ है। उसके लिए अच्छा

बुरा कोई भी नहीं है। मगर वह भी दुःखी हो जाते हैं। भूपति दुखिया, रंजा भी दुःखी हो जाता है।

अवधू दुखिया भूपति दुखिया।
राज रंक दुःखी विपरीति हो।

जो आपके पास चीज है, उसे इस्तेमाल करना चाहिए, छोड़ना नहीं चाहिए। रंक इसलिए दुःखी होता है, क्योंकि, जगत् के विपरीत चलता है।

कहें कबीर सकल जग दुखिया,
सन्त सुखी मन जीती हो।

जिसकी बुद्धि मति धीर है, वह सन्त सुखी है। अगर आप सन्त नहीं बने, तो आप सन्त की शरण में चले जाओ, और उससे नामदान की प्रार्थना करो।

नामदान प्रदान कीजे गुरु दीन दयाल।
चरन का नित ध्यान सुमिरन चित् न व्यापे काल।

नामदान का मतलब है दीक्षा। वह दीक्षा संस्कार बदलने के लिए दी जाती है। मनुष्य का एक जन्म माता-पिता के यहां होता है। दूसरा जन्म गुरु के यहां होता है। हिन्दुओं में उपनयन संस्कार होता है। इसमें इसमें गुरु बच्चे को गायत्री मन्त्र देता हैं। इससे बच्चे का नया जन्म होता है। इसलिए उसे द्विज कहते हैं अर्थात् दो बार पैदा हुआ। गुरु संस्कार बदल देता है। एक बार परम दयाल जी महाराज अमेरिका गए। वहां पर A.R.E की संस्था में सत्संग देने गए। मैंने परमदयाल जी का परिचय दिया। जब परमदयाल जी महाराज बोलने लगे,

तो सबसे पहले कहा, "अमेरिका वालों! मैं तुम्हारे लिए नहीं आया, मैं तो आई. सी. शर्मा के लिए आया हूं। शर्मा! आज से तेरा नाम मानव दयाल है। तुम इनका मार्ग दर्शन करोगे। उन्होंने मेरे संस्कार बदल दिए। इसलिए नामदान संस्कार बदलने का नाम है। नामदान प्रदान कीजे'। दूसरे नामदान के बाद उस रास्ते पर चलना, जिस पर चल कर स्वयं आत्मानुभूति हो जाती है और उसे अपनी असली ज़ातेपाक़ का भी पता चल जाता है। इस दीक्षा से अभयदान मिलता है। अब प्रश्न है कि नामदान किसको दिया जाए? नामदान उसे दिया जाए, जो अधिकारी है। यहां पर अधिकारी का मतलब बहुत पढ़ा लिखा होने से नहीं है। क्योंकि पढ़े लिखे व्यक्ति को तो अहंकार होता है। वह दीन नहीं है। दीन वह होता है, जिसके लिए चारों तरफ़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जब शरणागत होता है, तब वह नामदान का अधिकारी बनता है ऐसे ही दीन व्यक्ति को नामदान दिया जाता है।

चरन का नित ध्यान सुमिरन,
चित न व्यापे काल।

सदगुरु की निशानी है कि उसकी बुद्धि मति धीर होती है। लेकिन शिष्य की क्या निशानी है? शिष्य की निशानी है--'चरन का नित ध्यान-सुमिरन' शिष्य का मालिक के साथ ऐसा प्रेम हो कि लगातार उसी का ध्यान हो। जो कुछ करो, उसी मालिक के लिए करो। 24 घण्टे याद क ना है, मालिक के प्रेम में रहना है। लगातार गुरु का ध्यान हो। 'चित न व्यापे काल'। काल क्या है? अब आप यहाँ बैठे हो और आपको किसी काम की चिन्ता

हो रही है। यही काल है। काल का मतलब है कि आपका मन इतना दुःखी हो जाये कि आपको कुछ समझ न आए। अब आपको चिन्ताओं के कारण मालिक को याद करने का समय नहीं मिलता। यदि आप मालिक को याद करने का समय निकाल लेंगे, तो आपको काल नहीं व्यापेगा। इसी लिए प्रार्थना की जा रही है "हे गुरु! ऐसा नामदान दीजिए कि रातदिन आपका ही सुमिरन और ध्यान करूं। जब भी कोई मुसीबत आए, तो उसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं हो।"

सर्व समरथ सर्व अंगसंग सर्व जगत् आधार
शुद्ध मन से पदकमल को, करूं निसदिन प्यार॥

तुम्हारी हर प्रकार से रक्षा होगी। जब तुम उस मालिक के साथ जुड़ जाते हो, तो उसका ब्रह्माण्डी मन, तुम्हारा मन बन जाता है। तुम्हें पता नहीं होता कि चेतन के द्वारा अचेतन मन भी काम कर रहा है। इससे आपके सभी काम बन जाते हैं, आपकी बीमारियां दूर हो जाती हैं और मौत भी टल जाती है। क्योंकि तुम्हारा सम्बन्ध उस इष्ट के साथ है, जो अमर है, अमृत का ख़ज़ाना है। कहते हैं कि मीरा को ज़हर दिया गया। वह स्वयं भी जानती थी कि यह ज़हर है, मगर पी गई और उसे कुछ नहीं हुआ, क्योंकि उसका मन अमृत से जुड़ा हुआ था। यह अमृतकुण्ड तुम्हारे अन्दर मौजूद है। अगर तुम्हारा प्यार जबरदस्त है, तो तुम्हें डा. को कहने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी कि मुझे ठीक करो। अगर आपका प्रेम सच्चा है, अगाध है, तो वह मालिक किसी न किसी रूप में तुम्हारी

रक्षा करेगा और रास्ते की सभी बाधाएं समाप्त हो जायेंगी।

सिन्धु भव अति अगम दुस्तर सूझे वार न पार।

जीवन का यह समुद्र इतना अथाह तथा विशाल है कि पता ही नहीं चलता कि कहां जाकर किनारे लगेंगे। इस समुद्र को मुश्किल से पार किया जा सकता है।

विकल मन रहे सोच छिनछिन कैसे जाऊं किनार॥

मन विकल कब होता, कब घबराता है, जब मालिक में विश्वास नहीं होता। आप जितनी चिन्ता करेंगे, आपका काम उतना ही नहीं बनेगा। सीधी बात है कि तुम शरणागत हो जाओ, वह तुम्हें अपने आप किनारे से लगा देगा॥

दया कीजे मेहर कीजे लीजे चरन लगाय।
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय॥

अब आप तो चरण लगने को तैयार हो लेकिन वह भी अपने चरणों में लगने दे न तब है बात। वह मालिक अपने चरणों में तब लगायेगा, जब तुम्हारा अहंकार चला जाएगा॥ भक्ति दीजे। उससे कुछ नहीं मांगो, केवल भक्ति ही मांगो। जिसने भक्ति मांगी, उसने सब कुछ मांग लिया। भक्त कौन है, जो अविभक्त है? भक्त अपनी भक्ति से उस मालिक को वश में कर लेता है। भक्ति मांगने से भक्त तर जाता है।

शब्द में रत रहूं पल पल सूझे वार न पार।
राधास्वामी दया सागर भजूं मैं दिन रैन॥

शब्दानन्द! यहां पर शब्द का क्या मतलब है? शब्द में लीन हो जाऊं, चैन पाऊं। अब शब्द क्या है?

फटे न बिगड़े सूत न बिखरे,
सहज ही साफ़ कराय।
राधास्वामी धोबिया न्यारा,
शब्द का रंग दिलाय ॥

मैंने यह अनुभव किया कि और साधनों के द्वारा भक्ति करने से आपको हानि पहुंच सकती है। आप देवी का अनुष्ठान करो, लेकिन ज़रा सी ग़लती से आपकी जान जा सकती है। मगर सुरत-शब्द योग में इस बात का भय नहीं रहता।

राधास्वामी धोबिया न्यारा,
शब्द का रंग दिलाय ॥

यहां पर शब्द के रंग का मतलब है, प्रेम का रंग अर्थात् प्रेम में लय हो जाना एक हो जाना।

शब्द में रत रहूं पल - पल सुरत पावे चैन।

लगातार प्रेम में रत रहेगा, तो चैन मिलेगा। दुनिया की कोई चीज़ नहीं, जो दुःख दे सके।

राधास्वामी दयासागर भजूं मैं दिन रैन ॥

वह परमतत्वाधार, वह गुरु जो दया सागर है, उसका लगातार ध्यान करने से, उससे प्रेम हो जाएगा। यह प्रेम का रास्ता है। प्रेम ही मंज़िल है, प्रेम ही रास्ता है। प्रेम के अन्दर जब आप पराकाष्ठा पर पहुंच जाओगे, तब आपको असली नामदान मिलेगा। इन शब्दों के साथ मैं आज का सत्संग यहीं पर समाप्त करता हूं। सबको राधास्वामी।

मानवता मन्दिर की लायब्रेरी के उदघाटन के अवसर पर दयाल स्वरूप नन्दू भाई जी के प्रवचन का सारांस

हमारा सम्बन्ध सन्तमत से है। मत कहते हैं राय को। सन्तों ने अपना मत प्रगट किया। उनका मत कुदरती मज़हबधर्म है। उनकी पुस्तक हैं मानव चोला जो सब ग्रन्थों का सार है। सन्तों ने कुदरती नियमों के आधार पर जीवन गुजारने का राज़ (रहस्य) बताया। मैं विस्तार से नहीं किन्तु संक्षेप में उनकी ओर संकेत किए देता हूं।

हमारी तीन अवस्थाएं हैं, जिनमें से होकर हमें प्रतिदिन गुज़रना पड़ता है। यह अवस्थायें हैं जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। यह तीनों अवस्थायें निरन्तर बदलती रहती हैं और बदलती रहेंगी। जाग्रत अवस्था में देह और इन्द्रियां काम करती रहती हैं। मगर हम हर समय स्थूल इन्द्रियों से काम नहीं करते, इसलिए यह अवस्था सदा नहीं बनी रहती। जब तक मनुष्य में देह में रहता है, वह कभी भी एक हालत में नहीं रह सकता। स्वप्न अवस्था में जाग्रत

अवस्था नहीं रहती और जाग्रत में स्वप्नावस्था नहीं रहती।

स्वप्नावस्था में स्वप्न की इन्द्रियों से काम लेते हैं। यदि स्वप्न में प्यास लगी, तुरन्त ही कल्पित पानी का गिलास आ जाता है, और हम प्यास बुझा लेते हैं। मगर जाग्रत अवस्था में कल्पित पानी से प्यास नहीं बुझती। रहते हैं। तथा उसे प्रभावित होते रसते हैं। जाग्रत अवस्था में हम अनेक प्रकार के ख्यालों से गुज़रते इन ख्यालों के कारण हम कभी सुखी होते हैं, कभी दु:खी, कभी भयभीत होते हैं। स्वप्न अवस्था में जाग्रत अवस्था नहीं रहती। यह अवस्था भी स्थिर नहीं रहती, बदलगी ही रहती है क्योंकि हम हर समय स्वप्न ही नहीं देखते रहते।

सुषुप्ति में न जाग्रत अवस्था होती है न स्वप्नावस्था। परन्तु यह अवस्था भी हमेशा बदलने वाली होती है, जैसे कि जाग्रत और स्वप्नावस्था। इन तीनों अवस्थाओं का अनुभव हमें प्रतिदिन होता रहता है, परन्तु इनमें से कोई भी अवस्था स्थिर नहीं है, स्थायी नहीं है।

स्थूल देह तो प्रत्यक्ष है ही,मन क्या है ? मन जड़ और चेतन दो तत्वों से बना है। जब दोनों मिलते हैं तो क्रियाशक्ति आती है। सारी पुस्तकें सारे ग्रन्थ इस मन के विषय पर ही लिखे गए हैं। यह कभी एक हालत में नहीं रहता। यह महा चंचल है। चंचलता इस का स्वभाव ही है। यह नींद में, जाग्रत अवस्था में तथा सुषुप्ति में किसी भी अवस्था में शान्त नहीं रहता, चंचल ही रहता है। आप यदि किसी को गहरी नींद से जगाओ तो वह जागते ही कहेगा, "भई !

इतने आनन्द से सोया था कि तन बदन की सुध ही नहीं रही। परन्तु ऐसी अवस्था भी स्थायी नहीं होती। यह त्रिगुणात्मक जगत् है। इसमें रहने वाला कभी भी एक हालत में नहीं रहता। इनका बदलना लाज़िमी है। इसलिए स्वामी जी ने कहा है :-

तीन छोड़ चौथा पद दीना।
सतनाम सतगुरु गति चीना॥

यह तीनों अवस्थायें काल और माया के अन्तर्गत हैं। जागृत स्वप्न तथा सुषुप्ति तीनों की तीनों अवस्थाएं निरन्तर बदलती रहती हैं। इसलिए सन्तों की शिक्षा इन तीनों अवस्थाओं से परे, चौथे पद से शुरू होती है।

इन तीनों अवस्थाओं का सम्बन्ध, मनुष्य के तीन शरीरों से है। मनुष्य के स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण तीन शरीर हैं। जब मनुष्य स्थूल देह यानि कि जाग्रत अवस्था में रहता है वह स्थूल इन्द्रियों से काम लेता है। स्थूल शरीर का ज्ञान भी जाग्रत में होता है। जब वह सूक्ष्म शरीर में रहता है, वह मन या सूक्ष्म इन्द्रियों से काम लेता है, और इसका ज्ञान स्वप्न में होता है और सुषुप्ति में वह कारण शरीर से काम लेता है। इसका ज्ञान सुषुप्ति में होता है। देह और मन की भक्ति स्थूल और सूक्ष्म शरीर के साथ बदलने वाली है ही, मगर सुरत की भक्ति भी बदलती रहती है। सुरत की भक्ति में शब्द और प्रकाश होता है। वे भी बदलते रहते हैं। सन्तों ने बताया है कि चौथा पद, या चौथी अवस्था ज़ात (निज स्वरूप) का मण्डल है, जो सदा एक रस रहता है। चौथे पद में रहने

वाला व्यक्ति इन तीनों शरीरों तथा तीनों अवस्थाओं का ज्ञान रखता हुआ इनके आधीन नहीं होता। वह इनमें रहता हुआ भी इन अवस्थाओं में गुज़रता हुआ भी जीवन अच्छे ढंग से बिताता है, क्योंकि वह इनके आधीन नहीं होता। इन्सानियत रुहानियत से बढ़ कर है।

सोच लो, समझ लो और देख लो। संसार के सभी मानव देह धारियों में यही बातें मिलेंगी। प्रकृति माता हमको सबक देती है कि हम सब मानव देह धारी भाई - 2 है। मिल जुल कर रहने में ही शक्ति है,जीवन के दिन हंसते खेलते ही गुज़ारो।

जीवन गुज़ारने के दो मार्ग हैं: (1) प्रवृति मार्ग (2) प्रकृति मार्ग। निवृति मार्ग की शिक्षा बच्चों के लिए नहीं है। यहअस्वाभविक है, इसके अपनाने से बच्चों का जीवन बिगड़ भी सकता है निवृति मार्ग में एक ही जात (निज स्वरूप) पर विश्वास रखो। उससे चाहे राम के रूप में मानों, चाहे कृष्ण के रूप में चाहे फ़कीर के रूप में चाहे किसी और गुरु से रूप में, प्रवृति मार्ग में यदि प्रभुत्व चाहते हो तो आगे बढ़ो और फैलो। सब से मिलकर रहने में ही सुन्दरता है। पत्ते - २ में एकता है, पशु-पक्षियों तक में एकता का रूप देखने को मिलता है। चींटियां मण्डल बना कर चलती हैं, हिरण तथा और पशु तथा पक्षी भी गिरोह बना कर चलते हैं। सन्तों ने जीवन-यापन के तीन मार्ग बताए हैं। वे मार्ग हैं ।कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग तथा भक्ति मार्ग। यह संसार कर्मस्थल है, जहाँ हर एक को कर्म करना पड़ता है। जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेंगे उन्हें

अच्छा फल मिलेगा। बुरा कर्म करने वालों को बुरा फल मिलेगा। कर्म के फल से कोई भी नहीं बच सकता। मन का काम संकल्प उठाना है। यदि किसी व्यक्ति के संकल्प अच्छे हैं भलाई के हैं, उन्नति के हैं, कल्याणकारी हैं तो उसका फल अच्छा मिलेगा वर्ना "जैसा बोओगे वैसा काटोगे" इसलिए सन्तों ने कहा है कि चौथा पद ज़ात (निज स्वरूप) का मण्डल है। मन की धार ज़ुबान से मिली हुई होती है। अब मैं आपके सामने बोल रहा हूं, और आप सुन रहे हैं। यदि धार न आए तो मैं बोल ही नहीं सकूंगा। उसको शक्ति आत्मा से आती है और आत्मा को शक्ति ज़ात (निजस्वरूप) से आती है। ऐ मानव! तो उसमें रह, वहां रहने से तुम्हें शान्ति मिलेगी और तुम्हारा जीवन सुख चैन से बीत जायेगा।

अपना सम्बन्ध अपने निज स्वरूप (ज़ात) से जोड़ो। उनसे कोई अलग नहीं है। यदि तुम उसे अलग मानते हो तो यह तुम्हारा भ्रम और अज्ञान है! हमारा जीवन उसी पर ही निर्भर है। इसलिए सन्तों ने कहा है :—

आप आप को आप पिछानो।
कहा और का नेक न मानो॥

क्या तुम देह, मन और आत्मा हो? तुम इससे इन्कार नहीं कर सकते तुम इससे अलग नहीं, परन्तु देह, मन तथा आत्मा के अलावा तुम कुछ और भी हो। उस चैतन्यता (consciousness) के साथ बैठक होने से हम सुखी हो सकते हैं। दुःख क्या है? दुःख नाम है, कमी

का धन, सन्तान, विद्या आदि की कमी का । कमी सभी महसूस करते हैं लखपति करोड़पति भी महसूस करते हैं। ऐसा क्यों है ? क्योंकि हम सब कमी (अपूर्णता) के मण्डल में रहते हैं। पूर्णता के मण्डल से सम्बन्ध जोड़ो। निज स्वरूप (ज़ात) का मण्डल पूर्णता का मण्डल है। वहां कोई कमी नहीं है।

तुम देह में रहते हो। देह को बनाए रखने के लिए देह से काम लो। समता में रहते हुए शरीर से काम करो। मन को समता में रखते हुए मन से काम लो। समस्त इन्द्रियों को अपने वश में रखो उनके आधीन या वश में न रहो, तो तुम पूर्णता के मण्डल में पहुंच जाओगे।

फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट सुतैहरी रोड, होशियारपुर को दिया धन आयकर अधिनियम को धारा80- के अन्तर्गत,आयकर आयुक्त के पत्र नं. ***JUDL TRUST 13999 dt. 31-12-91***, साल *30-4-93-94* तक आयकर से मुक्त है।

मासिक सन्देश

सत्संग परमसन्त सद्गुरु

हजूर मानव दयाल

डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज

मेरे अन्तरात्मस्वरूप, सद्गुरु रूप, परमप्रिय सत्संगी भाईयो और बहनों

राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई ।

पिछले मासिक सन्देश में मैंने आपको सत्संग दौरे की कोई सूचना नहीं दी,और मैंने केवल सन् 1993 को 'सर्व धर्म समन्वय, का वर्ष घोषित करते हुए यह बताया था कि भारत और विदेशों में शिकागो अमेरिका में सन् 1893 के विश्व धर्म संसद के उपलक्ष्य में भारत और अन्य देशों में सर्व धर्म समन्वय के प्रचार के लिए जगह - 2 पर सम्मेलन और गोष्ठियां आयोजित हो रही हैं। इस सन्दर्भ में मैंने आपको मार्च मास के सन्देश में मैंने आपको पहले सूचना दे दी थी कि मानवता मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय नवअफलातूनवाद परिषद और अन्तर्राष्ट्रीय धर्म और शान्ति स्थापित करने की संस्था के सहयोग में नई दिल्ली में दो सम्मेलनों और गोष्ठियों में

सक्रिय भाग लिया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि विश्वभर में सभी धर्मो के अधिकारी और अनुयायी मानवता धर्म की उत्कंठा रखते हैं और उनकी यह उत्कंठा गुरुमत, सन्तमत एवं सत् सनातन धर्म—मानवता धर्म के नियमों पर चलने से हो सकती है। इसी सन्दर्भ में मैंने मार्च के मासिक सन्देश में आपको सूचना दी थी कि परमदयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन करते हुए मैंने 25 अक्तूटबर 1992 से लेकर 7 फरवरी 1993 तक की सूचना दी थी। 3 फरवरी को मैं होशियारपुर पहुंच गया। 19 फरवरी शिवरात्रि के दिन मानवधाम में परमदयाल शिव मन्दिर का उद्घाटन समारोह आयोजित था। इसलिए हम कार द्वारा 17 फरवरी को रवाना हो गए और होशियारपुर से सम्मिलित होने वाले कुछ अधिकारी और सत्संगो बस द्वारा भी मानव धाम पहुंचे। यहाँ पर यह बात उल्लेखनीय है कि दुहाई की अनेक शैक्षणिक संस्थाओं को चलाने वाली सुश्री डा. शुक्ला ने मानवता धर्स को अपनाया है। उन्होंने यह निश्चय किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय मानवता परिषद के सहयोग से इन शैक्षणिक संस्थाओं को मानवता धर्म के आधार पर चलाया जाए। उनका यह निर्णय महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के उस उद्देश्य की पूर्ति करेगा, जिसमें उन्होंने परमसन्त फ़कीरचन्द जी महाराज को सम्बोधित करते हुए कहा था, "फ़कीर! धर्म की एवं सन्तमत की शिक्षा को चोला छोड़ने से पहले बदल देना।" इसी प्रकार डा. शुक्ला के इस संकल्प से परमदयाल जी महाराज के वे शब्द भी सत्य प्रमाणित हो रहे हैं, जिनमें उन्होंने मुझे 1980 में एक पत्र में लिखा था, 'दयाल शर्मा! तुम्हारी जातेपाक के ज़रिया यह

मानवता धर्म विश्व में फैलेगा ! फैलेगा !'' फैलेगा ! 17 रात को हम फरीदाबाद में रहे और 18 रात्रि को डा. शुकला की संस्था में विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम स्नान आदि से निवृत्त होकर मानवधाम स्थल पर पहुंचे। वहां पर सैंकड़ों सत्संगी मौजूद थे, जिनमें से काफी लोग 18 रात तक पहुंच गए थे। अनामी शिव मन्दिर समारोह बहुत ही प्रभावशाली रहा। दूर - 2 से आए हुए हजारों सत्संगी इसमें सम्मिलित हुए। बिधिवत् गायत्री महायज्ञ में विश्व शान्ति के लिए आहूती दी गयी। यहां पर यह बता देना आवश्यक है कि श्री प्रकाश चन्द चौहान लंदन निवासी ने 2 साल पहले से ही इस शान्ति यज्ञ आयोजित करने का आगृह किया था। उस दिन उनकी मनोकामना पूर्ण हुई। इस अवसर पर श्री प्रकाशचन्द चौहान, उनकी पत्नी और उनके लुधियाने में स्थित पुत्रों के परिवार भी बड़े उत्साह से सम्मिलित हुए। इसके तुरन्त बाद फ़कीर सत्संग भवन में उद्घाटन सत्संग आयोजित हुआ। हजारों सत्संगी इस अवसर पर प्रेरणा प्राप्त करके गद्गद् हुए। सत्संग का विषय कबीर साहिब के "अनघड़िया देवा" शब्द के आधार पर था, जिसमें परमतत्व आधार परमेश्वर के स्वरूप की व्याख्या की गयी और बताया गया कि शंकर भगवान का प्रतीक शिवलिंग वास्तव में हर प्रकार की उपाधियों से मुक्त, शुद्ध प्रकाशमय, शिवाकार ही अनघड़िया देवा का सच्चा स्वरूप है। इस दृष्टि से सन्तमत भी फ़कीरों का मत है एक शिव की उपासना पर आधारित निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति है।

मेरे सत्संग के पश्चात् आचार्य के. पी. वर्मा और

आचार्य कृष्ण मोहन तिवारी ने मानवधाम के निर्माण की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वास्तव में पूज्या भाग्य माता जी ने ही इस धाम की कल्पना की और इसके निर्माण में लगातार परिश्रम किया, किन्तु उन्होंने इसका श्रेय दूसरों को दिया। पूज्या भाग्य माता जी ने इस अवसर पर बहुत उत्कृष्ट प्रवचन दिया और बताया कि यह धाम युगों तक मानव धर्म के प्रसार में और मानवमात्र के कारण में अनन्तकाल तक उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि इसके निर्माण को पूरा करने के लिए 20 लाख धन राशी की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि सभी सत्संगी यथाशक्ति बिल्डिंग फ़ण्ड में अनुदान दें और जो व्यक्ति इस शुभ कार्य के लिए कम से कम 5 हजार रुपए की धनराशी ब्याज के बिना 2 वर्ष के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानवता परिषद को दें, तो यह कार्य बहुत ही थोड़े समय में सम्पन्न हो जाएगा। हमें इस बात का दुःख भी है कि उनकी यह अपील उनके जीवनकाल की आखरी अपील थी। उन्होंने कई महीने पहले से अनेक अवसरों पर बताया था कि उनका मानवता मन्दिर एवं मानवधाम की सेवा का कार्य पूर्ण हो चुका है और वह शीघ्र ही परमदयाल जी के पास परमधाम चली जायेंगी। हमें इस बात का गर्व है कि जिस सन्त गति में उन्होंने शरीर छोड़ा वह अध्यात्मिक इतिहास में अद्वितीय है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हम सब उनके स्वप्न को शीघ्र ही साकार बना देंगे।

सत्संग के पश्चात् सभी सत्संगियों ने भंडारे का भोजन खाया और बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में अपने - 2 स्थानों को

रवाना हो गए। उन्होंने रवाना होने में भी 3 घन्टे लिए। यह समारोह वास्तव में विशेष था। भविष्य में हर शिव-रात्रि को मानवधाम में ही सत्संग, सन्तसम्मेलन और अध्यात्मिक गोष्ठी हुआ करेगी। इसी आधार पर भारत और विश्व के सभी केन्द्रों में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सत्संग आयोजित किए जायेंगे, क्योंकि महाशिवरात्रि महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के जन्म और निर्माण का दिन है।

20 फरवरी को हम कार द्वारा पंचकूला और चण्डीगढ़ होते हुए सायंकाल तक सोशियारपुर पहुंच गए। 21 फरवरी को जो सप्ताहिक सत्संग हुआ, उसमें भी संख्या बहुत अधिक थी और सत्संग में भाग लेने वालों ने अत्यन्त ध्यानपूर्वक सत्संग सुना और गद्‌गद् हुए। 9 मार्च को हम मेरे प्रिय सत्संगी जानेश्वर गोयल डिस्ट्रिक जज हमीरपुर हिमाचल की सुपुत्री कु. ममता के विवाह उत्सव पर चण्डीगढ़ गए। 9 मार्च को हमने पंचकूला में श्री देशराज शर्मा के घर पर निवास किया। चण्डीगढ़ के बहुत से सत्संगी मिलने के लिए आते रहे। 10 माच को भी चण्डीगढ़, मुल्लांपुर, अम्बाला और पंचकूला के सत्संगी मिलने के लिए और परामर्श के लिए आए। उसी दिन हम श्री रमेश डोगरा डिप्टीस्पीकर पंजाब विधान सभा के निमन्त्रण पर चण्डीगढ़ में उनके निवास-स्थान पर दुपहर के भोजन के लिए गए। थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् और सत्संगियों के संशय निवारण में कुछ समय लगाकर हम सायंकाल 7 बजे

श्री सिने रमेश डोगरा के साथ चण्डीगढ़ 27 सैक्टर में श्री जानेश्वर गोयल की सुपुत्री के विवाह स्थल पर पहुंच गए। यह शुभ विवाह बहुत शानोशौकत से सम्पन्न हुआ। जब हम होशियारपुर से चले थे, तो मैं इस गलत फहमी में था कि विवाह का समय प्रातःकाल 10 बजे था। जब हम इस विवाह में रात को ही सम्मिलित हुए, हमें रात्रि को चण्डीगढ़ रहना पड़ा और 11 मार्च को ही हम होशियार लौटे। 12 मार्च को में लिखने पढ़ने मे व्यस्त रहा। 14 मार्च का मासिक सत्संग बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

15 मार्च को कार द्वारा होशियारपुर से रवाना होकर हम उसी दिन सायंकाल देहली पहुंचे। 16 मार्च को राजपुर रोड पर और फरीदाबाद बहुत से सत्संगी मिलने के लिए आते रहे। 17 मार्च को हम करीब 10 बजे अलवर के लिए रवाना हुए और 3 बजे दुपहर तक अलवर पहुंच गए। श्री मूलचन्द गांधी के निवासस्थान पर सैंकड़ों सत्संगी प्रतीक्षा कर रहे थे। इन सब को मिलने और परामर्श देने के बाद रात्रि को सायंकाल 7 बजे ब्रह्मचारी चौक में एक विशाल सार्वजनिक सत्संग आयोजित हुआ। इस सत्संग में हमारे सत्संगियों के अलावा अनेक सनातनधर्मी और व्यास के भी सत्संगी मौजूद थे। सत्संग में इतनी शान्ति थी और ऐसा लगता था कि सारी संगत समाधिस्थ हो गयी। अलवर का केन्द्र सबसे पुराना केन्द्र है। परमदयाल जी महाराज को प्रथम अलवर निमन्त्रित करने वाले वरिष्ठ सत्संगी मोहन लाल और श्री जगन्नाथ थे। इस सम्बन्ध में यहां पर उन परिस्थितियों को प्रस्तुत करना उचित होगा, जिसमें

परम दयाल जी नें अलवर का निमन्त्रण स्वीकार किया।

करीब 30 वर्ष से भी अधिक समय की बात है कि श्री मोहन लाल और जगन्नाथ अनेक अलवर के सत्संगियों समेत, परमदयाल जी महाराज के सत्संग के आनन्द की धारा का अनुभव करने के बाद और आरती के बाद परम दयाल जी को नमस्कार करके कहने लगे, "महाराज ! आप दिल्ली के दशहरे के सत्संग के बाद अलवर पधारने की कृपा करें।" सत्संग का वह अन्तिम दिन था, इसलिए उनकी प्रार्थना थी कि परमदयाल जी दूसरे दिन ही अलवर पधारें। परमदयाल जी ने पूछा, "तुम मुझे अलवर क्यों ले जाना चाहते हो?" मोहनलाल ने कहा, "महाराज ! यूं तो बहुत से सत्संगी आपके सत्संग का लाभ उठायेंगे, किन्तु मैं यह भी चाहता हूं कि आप मुझे और मेरी पत्नी को पुत्र प्राप्ति का प्रसाद दें।" परमदयाल जी ने तुरन्त ऊंची आवाज़ में कहा, "मैं क्या तुम्हारा नौकर हूं, जो तुम्हारे काम के लिए अलवर चलूं ? मैं नहीं चलूंगा।" मोहन लाल और जगन्नाथ रो पड़े और उन्होंने बार - बार परम दयाल जी महाराज को अलवर चलने का आग्रह किया। परमदयाल जी ने कहा, "अच्छा। तुम 3000 रुपए मंदिर को दो।" उन दोनों ने कहा, "महाराज हम आज सायं-काल तक 3000 रुपए अरदास कर देंगे।" सायंकाल उन्होंने श्री गोपालदास को 3000 रुपए दे दिए।

दूसरे दिन करीब 10 बजे की ट्रेन में परम दयाल जी अलवर के सत्संगियों के साथ बैठ गए। जब ट्रेन कुछ ही फासले तक चली थी, तो ईन्होंने चिल्लाकर कहा,

"गोपालदास इनके 3000 रुपए वापिस कर दो। मैं तो इनकी परीक्षा ले रहा था।" अलवर के सत्संगी बहुत गद्गद् हुए। परमदयाल जी ने अलवर में सत्संग दिए और अन्त में मोहन लाल को तथा उनकी पत्नी को पुत्र प्राप्ति का प्रसाद देकर भावी पुत्र का नामकरणी कर दिया। मोहन लाल की इच्छा तो पूरी हो गयी और इसके साथ-2 अलवर राजस्थान में सत्संग का पहला केन्द्र बन गया।

मैंने यह घटना आपको इसलिए बतायी है कि मेरा अलवर जाना, इसलिए जरूरी था कि इस बार भी श्री मोहन लाल का यह आग्रह था कि मैं उनके निवास-स्थान पर रात्रि का विश्राम करूं। उनका सारा परिवार मेरी सेवा में लग गया।

18 मार्च को प्रातःकाल अलवर के सभी सत्संगियों को आशीर्वाद देकर हम करीब 11 बजे अलवर से रवाना हो कर 3 बजे तक 16 सी बापू नगर श्री महाराज कृष्ण शर्मा के निवास-स्थान जयपुर पहुंच गए। वहां पर सैकड़ों सत्संगी और कैप्टन लाल चन्द जी मौजूद थे। हालांकि कोई औपचारिक सत्संग आयोजित नहीं किया गया था सायंकाल 5 बजे से 7 बजे तक अनायास ही सत्संग हो गया। 19 मार्च को हम 10 बजे प्रातः भीलवाड़ा के लिए रवाना हो गए और उसी दिन सायं 4 बजे तक श्री तेजेन्द्रमणी गुप्ता के निवासस्थान पर शास्त्री नगर पहुंच गए। यहां पर तो भीलवाड़ा के सत्संगियों के इलावा अजमेर, ब्यावर, चित्तौड़गढ़ और आसपास के इलाकों से आए हुए सत्संगी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। सायंकाल का

सार्वजनिक सत्संग श्री तेजेन्द्रमणी के निवासस्थान के निकट एक विशाल मंडप में हुआ। सत्संग स्थल पूरा भरा हुआ हुआ था। आचार्या गीतासरफ ने शब्द पढ़ा, जिसके आधार पर 2 घन्टे लगातार सत्संग चला। इसी प्रकार दूसरे दिन प्रातःकाल 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग देने के पश्चात् 11 बजे हम कार द्वारा जयपुर इसलिए रवाना हो गए, क्योंकि श्री राजेश्वरराव आन्ध्रप्रदेश के राज्य सभा के सांसद ने राजस्थान के राज्यपाल श्री चन्ना रैड्डी को आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए 20 मार्च को सायंकाल 6 बजे मेरी और उनकी मुलाकात का समय निश्चित करा दिया था। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि श्री चन्ना रैड्डी बहुत ही सौम्य हैं और सन्तों का आदर करते हैं। हम उसी रात को अजमेर पहुंच गए और रात्रि का विश्राम करने के पश्चात् दूसरे दिन प्रातःकाल 7 बजे भीलवाड़ा के लिए रवाना होकर करीब 9 बजे शास्त्री नगर पहुंच गए। 10 बजे से 12 बजे तक सत्संग आयोजित हुआ। दुपहर के भोजन के पश्चात् हम आचार्या श्रीमती मोहनी बाई, आचार्या श्रीमती गीतासरफ और की कैलाश के घर गए। 7 बजे सायंकाल हम भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गए क्योंकि हमें 8 बजे सायंकाल मीनाक्षी एक्सप्रेस के द्वारा इन्दौर जाना था। 21 प्रातःकाल ही श्री शब्दानन्द और कु. साधना मध्यप्रदेश के दौरे के लिए पहुंच गए। माता जी भीलवाड़ा तक मेरे साथ थीं। उन्होंने हमें बड़े प्रेम से मीनाक्षी एक्सप्रैस पर विदाई दी क्योंकि उन्होंने कार के द्वारा जयपुर और देहली

होते हुए होशियारपुर जाना था।

इस मासिक सन्देश के लिए यहां तक के दौरे की सूचना और मानवता मन्दिर की गतिविधि का विवरण पर्याप्त है। में सच्चे दिल से आशीर्वाद देता हूं कि आप सब को इस मासिक सन्देश से प्रेरणा प्राप्त हो। आपको स्वास्थ्य, सांसारिक सुख एवं आत्मा के आनन्द को प्राप्ति हो और आपके लोक और परलोक दोनों सध जायें। इन शब्दों के साथ मैं आपको इस महीने की सद्भावना देता हूं।

सबको राधास्वामी।

आपका फ़कीरमय
मानव

राधास्वामी

(सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज)

21-9-1980 मानवता मन्दिर, होशियारपुर

अभी एक आदमी आया हुआ है मेरे पास । मैंने पूछा, "भाई बड़ी देर के बाद आया है।" कहने लगा, "महाराज, आपने बुलाया नहीं, मैं आया नहीं। आज सुबह आपने कहा और मैं आ गया।" किसने उसको कहा कि तू आजा ? मैंने कहा ? यह सब उसका अपना ही मन था। इसी भ्रम में आकर हम सब गृहस्थी या दुनिया के आदमी इस सब चक्कर में आकर, पागल और दीवाने बने हुए हैं। मज़हबों, गुरुओं, पन्थों के पीछे फिर फिर कर अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी। जो मतलब है सत्संग का, वह कुछ और है। तुलसीदास जी कहते हैं :--

"बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।"

सत्संग से क्या मिलता है ? समझ मिलती है, विवेक मिलता है, अक़ल मिलती है, रास्ता मिलता है। दुनिया ने गुरुमत को समझा नहीं। वह गुरु उसको मानते हैं जिसने मानवता मन्दिर बनाया हुआ है, हस्पताल खोला हुआ है। किसी ने स्कूल खोला हुआ है। वे समझते हैं, जो ऐसा

करता है, वह सन्त है। 'यह गलत है', मैं यह नहीं कहता। ये काम दुनिया के हैं, होने चाहिएं। इसकी मैं क़द करता हूं। मगर जिसने हस्पताल खोल दिए, स्कूल खोल दिए और ये सारे काम कर दिए, कोई कहे कि वह सन्त है, तो यह बिल्कुल झूठ है, गलत है। सन्त तो एक हालत है, इन्सान के अपने जीवन की जहां उसको चिन्ता, फ़िकर, ग़म नहीं सताता और वह एक ऐसी अवस्था में रहता है जिसको शान्ति कहा जाता है। समाज के निम्नतम वर्ग का व्यक्ति भी संत हो सकता है और एक कमाण्डर इन चीफ़ भी सन्त हो सकता है, एक बादशाह भी सन्त हो सकता है, एक किसान भी सन्त हो सकता है। तो आज सत्संग है क्योंकि मेरे ज़िमे ड्यूटी थी दाता दयाल ने लगाई हुउ, "चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना।" और मैंने यह प्रण किया था अपनी ज़िन्दगी में इस रास्ते चलूंगा। जो कुछ मुझे मिलेगा कह जाऊंगा। तो आज कबीर साहब का शब्द सुनाता हूं कि सत्संग से क्या मिलता है :---

"चल सत्गुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये,
कीजे साहब से हेत परम पद पाइए।"

यह है! सत्गुरु के पास से क्या मिलता है? ज्ञान और बुद्धि, समझ और विवेक। इस के सिवाए जितनी बातें लोग कहते हैं, सब मनमत हैं, और बे अक़ली की है जिनका न कोई सिर है न पैर है। मैंने अपने आपको सन्त सद्गुरु वक़्त कहा है, गुरु की आज्ञा से और अपनी ज़िंदगी को देख कर अब मैं अपना फ़र्ज पूरा कर जाना चाहता हूं। मैं क्या ज्ञान और बुद्धि देना चाहता हूं? पहला सवाल यह है कि हम

देखें, यह सन्सार कैसे बना ? शास्त्र कहते हैं, "वह एक था, उसने कहा मैं एक से अनेक हो जाऊं" वह एक से अनेक हो गया। मुसलमान कहते हैं---

"कुन के कहने से किया आलम बका।"

वह क्या चीज़ है जो यह संकल्प करती है ? इन्सान की वासना, इन्सान की ख़्वाहिश, इन्सान की इच्छा। जिस तरह हम वासना करते हैं, उसी तरह दुनिया को पैदा करने वाला, जो क्रियेटर है, वह भी वासना करता है। उसकी वासना क्या है ? आपके अन्दर की हरारत है। हरारत क्या है ? हरारत आपकी वासना है। पानी के अन्दर ठण्डक है। ठण्डक पानी की वासना है। जो भी हस्ती है, उस में से जो रेडियेशन निकलती है, वह उसकी वासना है। तो सब से पहले है वासना। जिस तरह से यह संसार रचा गया, हम भी अपना सन्सार रचते हैं। हम वासना करते हैं, ख़्वाहिश करते हैं। पहली बात यह है कि जिस वासना से जिस ख़्वाहिश से सृष्टि को पैदा किया उसने, वैसा ही काम होता है। इसलिए जिस वासना से, जिस ख़्वाहिश को लेकर हम सन्तान पैदा करते हैं, हमारी सन्तान हमारी वासना और हमारी ख़्वाहिश के मुताबिक होगी। यह फाउंडेशन है, जड़ ! इस वक्त आप देखो, मुल्क में क्या हो रहा है ! मुरादाबाद, इलाहाबाद, अलीगढ़ में क्या हुआ ? हिमाचल में हड़तालें हुई हैं। कोई जगह बची है ? यह क्यों है ? इस लिए कि जिस वासना से हम पैदा हुए हैं, वह ग़लत थी। हम लोग अदने स्वाद के लिए औरतों के पास जाते हैं, बच्चे पेट में आ जाते हैं। और जिस वासना को लेकर हम ख़ुद आऊट आफ़ कंट्रोल थे उस से जो बच्चे पैदा होंगे, औलाद

होगी, वह आऊट आफ़ कंट्रोल होगी। इस वक़्त जितनी मुसीबत हम पर आ रही है, इसी कारण है। लड़कों को देखो, सब आऊट आफ़ कंट्रोल हैं। ये ऐम. पी., ऐम. ऐल. ए. लोगों को कहते हैं झगड़ा मत करो, मगर आप, ख़ुद क्या करते हैं? इनके अपने घरों में शान्ति नहीं है। अब इन्दिरा गांधी है, इन्दिरा की बहू है, सब ऐसे हैं। हर रोज़ अख़बारों में पढ़ते हो, घर घर में अशान्ति है। सास बहू की नहीं बनती। मां बेटे की नहीं बनती। ये जितने खेल हैं, हमारे दुःखों के कारण हैं। हम में जितनी अशान्ति है उसका यही कारण है। तो मैं क्या ज्ञान देना चाहता हूं?

"चल सत्गुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइए,
कीजे साहब सों हेत, परम पद पाइए।"

तो मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूं। मैं यह जानता हूं कि तूती की आवाज़ नक़्क़ारखाने में कोई नहीं सुनेगा। मैं जानता हूं कि मैं जो कुछ कहता हूं, इसकी कोई वैल्यू नहीं। मेरे ज़िम्मे क्योंकि ड्यूटी थी और मैं क्योंकि सन्त सद्गुरु वक़्त की हैसियत से इस दुनिया में प्रकट हुआ हूं तभी मैं यह सब कह जाना चाहता हूं। मैं यह ज्ञान देना चाहता हूं कि जो जड़ है इन्सान की, जब तक कोई उसको ठीक नहीं करेगा, लाख कोशिश करके, कोई सर पटक के मर जाए और यह चाहे कि दुनिया में सुख और शान्ति आ जाए, यह नामुमकिन है, यह नहीं आएगी। कांग्रेस आ जाए, जनसंघ आ जाए, कोई भी आ जाए, यह कभी नहीं होगा, बिल्कुल नहीं। तो सब से पहले ज्ञान क्या है? वह ज्ञान यह है कि लोगों को चाहिए, सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करे। जब तक यह नहीं

होगा तो जो जैनरेशन पदा होगी तो वह जो हो रहा है वही करेगी। दूसरे मुल्कों में देखो क्या कुछ हो रहा है। हर जगह यही कुछ है हमारे मन में। आजकल ये जनसंघ वाले क्या करते हैं -पुरानी संस्कृति, पुरानी संस्कृति, पुरानी संस्कृति ! अरे पुरानी संस्कृति का ढंढोरा पीटने से क्या बनेगा ? जब तुम पुरानी संस्कृति पर अमल ही नहीं करते ? मनु जो आदि ऋषि हुए हैं, उन्होंने नियम बनाए हैं सन्तान उत्पन्न करने के लिए। अरे जब तुम मनु के हुकम का पालन नहीं करते तो तुम संस्कृति संस्कृति चिल्ला कर कहाँ जाओगे। ज़रा सोचो मेरी बात को। तो पहला ज्ञान तो मैं अपने बस इस संसार को यह कहना चाहता हूं कि सन्तान को सन्तान के खयाल से पैदा करो। यह जो खुद रौ (अनचाहे आ जाने वाली) औलाद पैदा हुई है, इस से तुम उम्मीद मत रखो कि यह दुनिया में अमन या शाँति ला सकती है। तुम अपने अपने घरों में देखो। मेरे पास हर रोज़ कई औरतें आती हैं, "मेरा लड़का मेरे आखे नहीं लगता (मेरा कहना नहीं मानता), यह नहीं करता, वह करता है।" मैं हंसता हूं "तुम अपने दिल से पूछो कि तुम ने बच्चे को कैसे पैदा किया।" संसार ... ... है। अगर कोई कौम को बना सकता है तो सिर्फ़ मातायें बना सकती हैं, यह बता जाता हूं। महात्मा गांधी ने क्या कर लिया ? 1921 में हिन्दू मुस्लमानों को स्वराज का लालच देकर एक जगह पानी पिला दिया। 1947 में उन्होंने एक दूसरे के सर काटे। रूप मारते हुए पकड़ा गया।

"पात पात को सींचते बिरवा गया सुखाय,
माली सींचे मूल को डाल पात पर जाय।"

तो जब तक मूल को, जड़ को ठीक नहीं किया जाएगा, कुछ नहीं बनेगा। मैं क्योंकि वक़्त का सन्तसद्गुरु हूं मैं शिक्षा बदले जा रहा हूं क्योंकि मेरे ज़िम्मे ड्यूटी थी गुरु महाराज ने लगाई हुई। अमल कोई करे न करे, जहन्नुम में जाए, मुझे क्या? मैंने क्या लेना है। मैं तो बंधा हुआ घसीटा जा रहा हूं। तो पहला संसकार क्या है? सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। दूसरा यह ज्ञान या बुद्धि मैं देना चाहता हूं कि जब बच्चे मां के पेट में होते हैं, तो जिस किस्म के विचार माता रखती है, जो कुछ वह सोचती है, उसका असर बच्चे पर जाता है। अभिमन्यु वाली बात आपने कभी सुनी होगी। कहावत है कि अभिमन्यु जब अपनी मां के पेट में था तो अर्जुन (उसका पिता) चक्रव्यूह तोड़ने का ज़िक्र (अपनी पत्नी) से कर रहा था जब वह जग रही थी। जब चक्रव्यूह से निकलने का ज़िक्र होने लगा तो पत्नी को नींद की झपकी आ गई। अभिमन्यु ने बारह बरस की उम्र में चक्रव्यूह बेधा। (निकल नहीं सका मारा गया। अब हुमायूं को सुनो। हूमायूं जंगलों में भटकता फिरता था दुश्मनों से घिरा हुआ। उसकी बेगम के पेट में बच्चा था। वो गया (उसके पास) तो औरत, उसकी बेगम बना रही थी नकशा। कहा, "क्या करती हो?" बोली, "मैं चाहती हूं कि मेरा यह बच्चा इतने मुल्क का बादशाह हो।" और वह (अकबर, वैसा बादशाह) हुआ। मैं बैठा हुआ हूं आपके सामने। मैं (पुलिस) सिपाही का बेटा हूं। बारह साल तक मेरे मां बाप के कोई औलाद नहीं हुई। मेरी मां मुझे बताती थी, "बच्चा, मैं स्टेशनों पर देखा करती थी कि स्टेशनमास्टर हरी झण्डियाँ लहराते हैं। डीज़ल की गाड़ी आती है, उसे दिखाते हैं। वहाँ उसकी इज्ज़त होती है। मैं प्रार्थना किया करती थी कि मेरे

भी जो बच्चा हो, स्टेशनमास्टर हो जाए।" उसकी ख्वाहिश का नतीजा यह हुआ कि मैं स्टेशनमास्टर हो गया और मेरा छोटा भाई सर्विस मैनेजर आफ़ दी रेलवेज़ हो गया। वे बातें मामूली हैं। मगर जब तक इन पर कोई अमल नहीं करेगा तो यह भूल जाओ कि तुम्हारा गृहस्थ का जीवन, तुम्हारा पालोटिकल जीवन, तुम्हारा सोशल जीवन या तुम्हारा आत्मिक जीवन सुख से गुज़रेगा. यह बिल्कुल ग़लत, बिल्कुल ग़लत।

(क्रमशः)

नारायणदास डोगरा
परमदयाल सर्वहितकारी मानवता मन्दिर,
फकीरधाम, सरड डोगरी, बरास्ता रक्कड़, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश

एक सत्संगी का पत्र

केवल ज्ञानी मानव दयाल जी महाराज

राधास्वामी।

कल पत्र लिखा था—लगातार फोन करता भी रहा। आज सुबह से मुझे रह रह कर आप का ध्यान आ रहा है। अभी 2 बजे मुझे ऐसा लगा आप बड़े उदास अपने कमरे में लेट रहे हैं। मैंने फोन किया। परदेसी जी बोल रहे थे। उन्होंने बताया आप अपने कमरे में आराम कर रहे हैं। मेरे सामने बिल्कुल वही तस्वीर है। ठीक बताया परदेसी जी ने मुझे तो ऐसा लग रहा है---मैं आपके साथ साथ हूं। आप की हर व्यवस्था मैं देख रहा हूं।

आप तो केवल ज्ञानी हैं - - स्वयं सब कुछ देख रहे हैं -- अनुभव कर रहे हैं - - परमदयाल जी महाराज आए थे - - कह रहे थे - - "क्यों रो रहे हो—मानव दयाल तो केवल ज्ञानी हो गया है - - अलोक प्रलोक का ज्ञानी - - कोई कोई केवल ज्ञानी होता है - -तीर्थ करो को यह position मिलती है दुनिया में कि नई रोशनी देगा---मोक्ष की गति बन्ध गई -- खुश होओ। माता जी अपने कर्म काट गई - - यह होना था - - वरना मानव दयाल केवल ज्ञानी कैसे होता - - दुनिया में शिक्षा पूरी तरह से कौन बदलता - - भगवान हो

गया है - - पूर्ण भगवान ... ...।" मैं हाथ जोड़ कर सुनता रहा — खामोश उन के मना करने के बावजूद भी आंखों का पानी रोक नहीं सका - - वह हंसते रहे और थपथपा कर चले गए।

मेरी आंखों के सामने माता जी का चेहरा आता है - - मैं घबरा जाता हूं — अभी 25 तारीख को मेरे पास - - मेरे घर पर आई थी। कह रही थीं अब H.O मानव धाम में बना देना है - - होशियारपुर में केवल त्योहार मनाया करेंगे - - सूचक था यह सब कुछ। रूपा जी बड़ी उदास हो गई हैं - - रो पड़ती हैं - -याद करके - - आपका ध्यान करती है तो ज्ञान से भर जाती है। यह सब माया है - - खेल है - - कह देती है।

हे - - मेरे केवल ज्ञानी महाराज आपके चरणों में रस रस प्रणाम। माता जी के चरणों में श्रद्धा के फूल।

तुम्हारे हमेशा अपने ही।
कृष्ण लाल जैन और डा. रूपा।

❋ महत्त्वपूर्ण सूचना ❋

दानवीर सत्संगियों तथा श्रद्धालुओं से अनुरोध है कि वे 'मानवता मिशन' के लिए भेजे जाने वाले सभी धनादेश, अर्थात् मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट केवल 'फ़कीर लायब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट रजिस्टर्ड अथवा ऐफ. ऐल.सी.टी. होशियारपुर को ही भेजें, किसी व्यक्ति, अधिकारी को नाम से अथवा पदधारी को कदापि न भेजें। इस बात की अनदेखी करने से दानराशि हिसाब में लेना संभव न हो सकेगा।

इससे भी अधिक ज़रूरी बात यह है कि दान भेजने वाले सज्जन, अपना नाम तथा पूरा डाक पता (ठीक पिन कोड सहित) बहुत स्पष्ट लेख में, जहां तक हो सके अंग्रेजी लिपि के बड़े अक्षरों में, लिखा करें। यदि स्वयं स्पष्ट अक्षरों न लिख सकें तो किसी अन्य स्पष्ट लिखने वाले व्यक्ति से लिखवा लिया करें।

राधास्वामी नाम-ध्वनि

राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परमसन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

BOOK POST

Regd No. 26265/74 MAY. 10th 1993

MANAV MANDIR PB HSP—5

Address

976. Sh. S. Vithal, S/O. Sh.
Arjan Rao Ji, PO. TQ Banswada,
(Gauliguder)-NIZAMABAD. (A.P.).

MANAVATA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR . 146 001
PHONE : 22639

Shiv Dev Rao Press Manavata Mandir. Hoshiarpur (Pb.)